

सूक्त	ऋषि	देवता	हन्द	मंत्र
अग्नि (10.1)	मधुच्छन्दा	अग्नि	गायत्री	9
वरुण (10.25)	शुनःशेष	वरुण	<del>वक्रवर्ति</del> गायत्री	21
सूर्य (10.115)	कुत्स	सूर्य	त्रिष्टुप्	6
इन्द्र (20.12)	गृत्समद	इन्द्र	त्रिष्टुप्	15
उषस् (30.61)	विश्वामित्र	उषस्	त्रिष्टुप्	7
पर्जन्य (5.83)	अत्रि	पर्जन्य	1, 5, 6, 7, 8, 10 अत्रिष्टुप् 2, 3, 4 अगती, 9 अनुष्टुप्	10
अस्र (10.34)	कवचसेलुष	अस्र ऋषि प्रसा, अस्र विवतिन्द	7 अगती, शेष त्रिष्टुप्	14
वृष (10.71)	बृहस्पति	बृहस्पति	9 अगती, शेष त्रिष्टुप्	11
पुरुष (10.90)	ताडायण	पुरुष	अनुष्टुप्, अन्तिम त्रिष्टुप्	16
द्विष्यगर्भ (10.121)	द्विष्यगर्भ	कर्मन्त्रक प्रजापति	त्रिष्टुप्	10
वाक् (10.125)	वागाश्रुणी	परमात्मा वाक्	2 अगती, शेष त्रिष्टुप्	8
वासदीय (10.29)	परमेष्ठी-प्रजापति	परमात्मा	त्रिष्टुप्	7
शिवसंस्कृत (34)	यानवल्क्य	मन्त्र	त्रिष्टुप्	6
प्रजापति (23)	प्रजापति	परमेश्वर	त्रिष्टुप्	5
राष्ट्राभिवर्धनम् (129)	वशिष्ठ	ब्रह्मणस्पति, अश्विर्वर्तमणि	अनुष्टुप्	6
काल (10.53)	भृगु	काल	त्रिष्टुप्	10
पृथिवी (12.1)	अथर्व	भूमि	त्रिष्टुप्	63

वेद	भाष्यकार	भाष्य	समय
ऋग्वेद	स्कन्दस्वामी	प्रथम पाँच अष्टक पर	600-625 ई०
	नारायण	षष्ठ तथा सप्तम अष्टक पर	
	उद्गीथ	अष्टम अष्टक पर	
	चैतन्यमाधव	सम्पूर्ण ऋग्वेद पर	1050-1150 ई०
	धानुस्वल्वा	→ त्रिवेदी भाष्यकार	1300 विक्रमपूर्व
	आनन्दतीर्थ (मद्व)	ऋग्वेद प्रथम 40 सूक्ती पर	1255-1335 ई०
	आत्मानन्द	'अस्यवामीय-सूक्त' पर भाष्य	<del>13वीं शताब्दी ई०</del>
	सायण	'वेदार्थप्रकाश' नामक भाष्य	1364-1387 ई० [14वीं शताब्दी]
यजुर्वेद (शुक्ल)	उष्वट	माध्यन्दिन संहिता पर 'उष्वट-भाष्य'	11वीं शताब्दी
	महीधर	→ वेददीप (माध्यन्दिन संहिता)	16वीं शताब्दी
	हलायुध	→ काण्व संहिता पर 'ब्राह्मण-सर्वस्व'	12वीं शताब्दी
	सायण	→ काण्व संहिता पर	
	अनन्ताचार्य	→ काण्व संहिता के उत्तरार्ध पर 'भावार्थदीपिका'	18वीं शताब्दी
	आनन्दबोध	→ काण्व संहिता पर 'काण्वेदी-मन्त्र भाष्यसंग्रह'	
	भट्टीषाध्याय	→ काण्व संहिता पर	
	बार्नेक	→ माध्यन्दिन संहिता के 31वें अध्याय पर	
कृष्ण-यजुर्वेद	कुण्डिन	→ तैत्तिरीय संहिता की वृत्ति	
	भवस्वामी	→ तैत्तिरीय संहिता भवस्वाम्या-दिभाष्य	विक्रम से 800 ई० पू०
	शुद्धदेव	→ तैत्तिरीय-संहिता	8-9वीं शताब्दी
	सुर	→ तैत्तिरीय-संहिता	
	भट्टभास्कर मिश्र	→ वाग्यस तैत्तिरीय-संहिता	11वीं शताब्दी ई०
	सायण	→ तैत्तिरीय संहिता	

सामवेद	भाष्यकार	भाष्य	सम
	माधव गुण विष्णु भट्टकवामी भास्कर मिश्र सायण	विवरण (सामवेदसंहिता) छन्दोग्य-मन्त्रभाष्य सम्पूर्ण सामवेद पर भाष्य ब्राह्मण पर सामवेदीय ब्राह्मणों पर	7वीं शताब्दी ई. 12वीं शताब्दी ई. उत्तरार्ध 13-14वीं शताब्दी ई.
अथर्ववेद	सायण	सम्पूर्ण अथर्ववेद पर	



→ वैदिक - व्याख्या पद्धति - [प्राचीन एवं अर्वाचीन]

→ वेद की व्याख्या - पद्धति को विभाजित किया जाता है →  
→ दो भागों में

(1) भारतीय - व्याख्या पद्धति

(2) पाश्चात्य - व्याख्या पद्धति

भारतीय व्याख्या पद्धति दो हैं → 1. प्राचीन  
2. अर्वाचीन

प्राचीन व्याख्या पद्धति के भाग दो हैं → 1. वैज्ञानिक  
2. याज्ञिक

अर्वाचीन के भेद हैं → 4

1. वैज्ञानिक

2. परम्परावादी

3. आध्यात्मिक

4. पाश्चात्य मत समर्थक

→ पाश्चात्य व्याख्या पद्धति तीन हैं →

1. परम्परावादी

2. भाषाशास्त्रीय

3. समन्वयवादी

→ प्राचीन भारतीय पद्धति →

1- यास्क (600 ई. पू.) → वैज्ञानिक - व्याख्याकार

2- सायण (14वीं शती ई.) → याज्ञिक - व्याख्याकार

→ भारतीय अर्वाचीन व्याख्या पद्धति →

(1) स्वामी दयानन्द सरस्वती (1824-1883 ई.)

↳ [वैज्ञानिक व्याख्या विधि]

→ रचना → सत्यार्थ प्रकाश

(2) अरविन्द (1872-1950 ई.)

↳ [आध्यात्मिक - विधि]

रचित पुस्तक → वैद रहस्य (On the Vedas)



## पाश्चात्य व्याख्या पद्धति →

### भारतीय

#### प्राचीन

##### वैज्ञानिक

यार्क  
वेङ्कटमाधव  
महीधर  
स्कन्दराम

##### याज्ञिक

सायण  
उव्वट  
क-दरवामी  
माधवभट्ट  
भट्टभारुकर  
महीधर, हलायुध, माधव, गुणविष्णु

#### अर्वाचीन

##### वैज्ञानिक

दरवामी  
-दयानन्द

##### आध्यात्मिक

उदविन्द

### पाश्चात्य व्याख्या पद्धति

#### परम्परावादी

बिलसन  
मैक्समूलर  
कीथ  
वेबर

#### भाषाशास्त्रीय

ग्रासमान  
रुडाल्फ राँथ  
विन्टनिलप्प

#### समन्वयवादी

लुडविग  
ग्रिफिथ  
उपेन्डेनबर्ग  
मैकडानल

## पाश्चात्य-व्याख्या पद्धति →

### 1- परम्परावादी-व्याख्या →

(1) होरेस बिल्सन (1784 ई० - 1860 ई० तक)

→ ऋग्वेद के प्रथम संग्रह गद्य अनुवादक हैं।

(2) मैक्स मूलर (1823-1900 ई० तक)

रचना → History of the ancient Sanskrit literature  
( प्राचीन संस्कृत साहित्य का इतिहास )

→ सायण भाष्य के साथ सम्पूर्ण ऋग्वेद का प्रकाशन।

(3) कीथ → [Religion and Philosophy of the Vedas and Upanishad]

### 2- भाषा शास्त्रीय व्याख्या →

(1) रुडॉल्फ राय (1821-95 ई०)

→ राय शिष्य थे → यूजीन बर्नार्ड के

महत्वपूर्ण कृति → [संस्कृत महाकौशा]

→ 'संस्कृत-महाकौशा' को 'पीट्सबर्ग-कौशा' कहा जाता है।

(2) ग्रासमान (1809-77 ई०)

↳ द्वविपरिवर्तन का नियम।

→ ऋग्वेद का व्युत्पन्न भाषा में पद्यानुवाद।

(3) विन्टरनित्ज →

[A History of Indian literature]

3 → समन्वयवादी-व्याख्या →

(1) लुडविग

→ 63 वर्षों में ऋग्वेद का जर्मन में अनुवाद किया था।

(2) ग्रिफिथ

→ चारों वेदों का अंग्रेजी में पद्यानुवाद।

(3) ओल्डेनबर्ग (1854-1920 ई०)

रचना → Vedic Hymns

→ ऋग्वेद का पाठालोचन तथा टिप्पणी नामक ग्रन्थ जर्मन में लिखा था।

(4) मैक्डानल (1854 ई०)

↳ Vedic Methodology [ वैदिक देवशास्त्र ]



## वैदिक-स्वर [ उदात्त, अनुदात्त, स्वडित ]

महाभाष्य → सप्त स्वर भवन्ति।

1. उदात्त, 2. उदात्ततर, 3. अनुदात्त
4. अनुदात्ततर, 5. स्वडित
6. स्वडित के माउम्भमे विद्यमान उदात्त (अन्य उदात्त से भिन्न)
7. स्कन्धुति

नाउदीय शिक्षा → 7 स्वर

1. षड्ज, 2. ऋषभ, 3. गान्धार,
4. मध्यम, 5. पञ्चम, 6. धैवत, 7. निषाद।

नाउद-शिक्षा → 5 स्वर

1. उदात्त, 2. अनुदात्त, 3. स्वडित
4. प्रचित (प्रचय) 5. निधात

तैत्तिरीय-संहिता → 4 स्वर

1. उदात्त, 2. अनुदात्त
3. स्वडित, 4. प्रचय

शाकल्य, माह्यन्दिन, काण्व, कीथुम तथा शौनक संहिता →

3 स्वर

1. उदात्त, 2. अनुदात्त, 3. स्वडित

1. उदात्त → उच्चैरुदात्तः ।
2. अनुदात्त → नीचैरनुदात्तः ।
3. स्वडित → समाहार स्वडितः ।

→ प्रचय → "स्वडितादनुदात्तानां परेषां प्रचयः स्वरः ।  
उदात्तभूतितां ग्रान्त्येकं द्वे वा बहूनि वा ॥"

उदात्तानुदात्त का सम्मिश्रण →

\* उदात्तानुदात्तयोर्गो स्वडितः स्वर उच्यते ।  
सैक्यं तत्प्रचयः प्रोक्तः सन्धिरेष मिथोऽद्भुतः ॥"

1 → संछित्य स्वडित अथवा सामान्य स्वडित →

एक पद मे → पु० छितम्, यत्नस्य  
अनेक पदों मे → अ० ग्निम् ईच्छे = अ० ग्निमीच्छे

2 → जाल्य स्वडित → नित्य स्वडित →

कन्या, ग्रान्यम्, कं, स्वरः ।

3 → अभिनिहित →

ते + अवन्तु = तेऽवन्तु

वेदः + असि = वेदोऽसि

4 → क्षेप →

वाप्ति + अर्वन् = वाज्यर्वन्

तु + इन्द्र = त्विन्द्र ।

६३ प्रश्लिष्ट →

सुचि + इत् → सुचीत्

अभि + क् + क्ताम् → अभिन्कताम्

अभि + क् + क्ताम् → अभिन्कताम्

→ सु + उद्गाता → सुद्गाता

→ प्र + अय → प्राय

आ + अय → आया

६४ तैत्तिरीयव्यकरण →

इडे, इन्ते, इवे काम्ये

देवी वः ।

७३ पादवृत्त / वैवृत्त →

मध्ये सत्यानृते अथ पदपद ।

ध्रुवा असदन्तस्य ।

८३ तैत्तिरीयविदाम →

गोपताविति गी पते ।

यत्पतिरिति यत् पतिः । (माध्य. सं०)

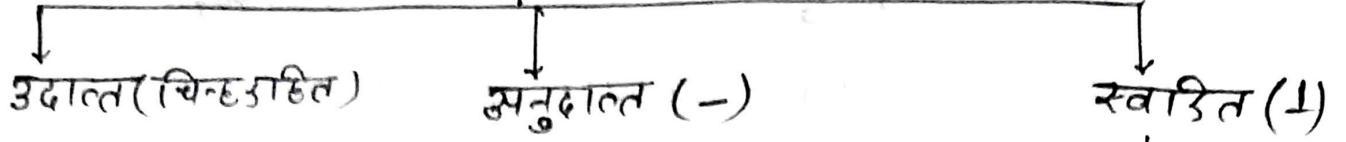
→ पूतद्वम् । विपद्वम् । (ऋ०)

९३ प्रातिद्वित →

इधे + त्वा + ऊर्ध्वे + त्वा → इधे त्वोर्ध्वे त्वा । (तै. सं०)



# वैदिक-स्वर



## स्वतंत्र

## माश्रित

संधिज → एकपदमेः पुङ्गोहितम्, युत्स्ये।

अनेकपदमेः अग्निम् ईळे →  
अग्निमीळे

असंधिज

आत्य / नित्य

कया, धायम्,  
क, स्वः।

→ पादवृत्त

→ प्रातिहत

→ तैडीव्यंजन्

→ तैडीकिङ्गम्

→ तायाम्भाय

→ लैप् → वाज्जी + अर्वन् → वाज्यर्वन्  
तु + इन्द् → निव्द्

→ प्रक्षिष्ट → सुचि + इव → सुचीव  
अभि + इन्धताम् → अभिन्धताम्

अभि + इन्धुताम् → अभिन्धुताम्

→ सु + उद्गाता → सुद्गाता

प्र + अस्य → प्रास्य

आ + मर्या → आर्या

→ आभिनिहित →

ते + भवन्तु → तेऽवन्तु

वेदः + असि → वेदीऽसि

## [4.] → वैदिक व्याकरण, निरुक्त एवं वैदिक - व्याख्या पद्धति :-

### ● वैदिक व्याकरण (ऋक्सप्रतिशास्य)

#### उपेक्षा

- प्रतिशास्य शिक्षा वेदांग के अन्तर्गत माने जाते हैं।
- प्रतिशास्य में भी स्वरवर्णादि के उच्चारण उपादि विषय प्रतिपादित हैं।
- ऋग्वेद का प्रतिशास्य ऋक्सप्रतिशास्य कहलाता है।
- ऋक्सप्रतिशास्य के कर्ता शौनक हैं।
- ऋक्सप्रतिशास्य पर उप्यट ने भाष्य भी लिखा है।
- ऋक्सप्रतिशास्य का विभाजन चट्ठी में है, तथा कुल 18 पटल हैं।

#### समानाक्षर और सन्ध्यक्षर →

#### ✓ अष्टौ समानाक्षराण्यादितः →

आरम्भ से 8 वर्ण (अ, आ, इ, ई, उ, ऊ) समानाक्षर कहे जाते हैं।

#### ✓ तत्तश्चत्वारि सन्ध्यक्षराणि →

उसके बाद 4 वर्ण (इ, औ, ऐ, ओ) सन्ध्यक्षर कहे जाते हैं।

#### अधीष

#### ✓ अन्त्यास्सप्त तेषाम् अधीषाः -

उष्म वर्णों (ह, श, ष, स, अः, ँ, अं) के अन्तिम सात वर्ण (श, ष, स, अः, ँ, अं) अधीष कहे जाते हैं।

२० वर्गों वर्ग च प्रथमावर्गों →

सभी वर्गों के पहले तथा दूसरे वर्ग भी उन्धोष कहे जाते हैं।

जैसे - क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प और फ।

कुल मिलकर 17 वर्ग उन्धोष कहे जाते हैं।

सौष्ठम और स्वरभक्ति →

सुष्ठम और सौष्ठम →

सभी वर्गों के द्वितीय और चतुर्थ (कुल 10) वर्ग सौष्ठम कहे जाते हैं।

जैसे - ख, घ, ङ, झ, ञ, ढ, ध, फ और भ।

स्वरभक्ति: पूर्वभागहराङ्गम् →

स्वर के साथ उद्गने वाले र और ल पूर्वभाग में स्थित स्वर (अक्षर) के अङ्ग होते हैं। जैसे - अदर्शि जलद्वय और शतवल्गा: इन दोनों उदाहरणों में र और ल पूर्वभाग के अङ्ग होते हैं उसी तरह आर्दिषेणः में स्थित र पूर्वभाग के स्वर अा का अङ्ग होता है।

दीर्घ और ह्रस्व स्वरभक्ति का काल

प्राचीनयसी सार्धमात्रा →

दीर्घ स्वरभक्ति सार्धमात्रा (आधी मात्रा) वाली होती है।

जैसे - प्रत्यु अदर्शि, वनस्पयै शतवल्गाः, कर्हि, ह्रयादि।

अर्धमात्रा →

अन्य (ह्रस्व) स्वरभक्ति आधी के आधी (1/4) मात्रा वाली होती है।

जैसे - आर्दिषेणः, बह्यन् । (आधमात्रा)

यदि उदाहरण में र याल के बाद एक ही व्यन्ज्य आता हो तो वह दीर्घ स्वरभक्ति कहलाती है। और यदि र याल के बाद दो या दो से ज्यादा व्यन्ज्य आते हों तो वह ह्रस्व स्वरभक्ति कहलाती है।



## यम

### अत्र यमीपदेशः:-

कण्ठादि स्थानी में यम का उपदेश किया जाता है। यह चार प्रकार के होते हैं:-

1. अधोष अल्पप्राण → कं, चं, टं, तं और पं। (पलिकनी)
2. अधोष महाप्राण → खं, कं, छं, घं और फं। (चरन्तुः)
3. सधोष अल्पप्राण → गं, जं, डं, दं और बं। (अग्नितुः)
4. सधोष महाप्राण → घं, ङं, ढं, धं और भं। (अहन्तुः)

कुल मिलाकर 20 वर्णयज्ञ संज्ञक हैं।

### रक्त और संयोग →

#### रक्तसंज्ञी अनुनासिकः →

अनुनासिक वर्ण रक्तसंज्ञक हैं जैसे - इ, ए, ऋ, ॠ और मू।

#### संयोगरतु व्यञ्जनसन्निपातः →

व्यञ्जन वर्णों का मेल संयोग कहलाता है।

जैसे - प्र वस्त्रिष्टुभामिषम्

## प्रभृष्ट

### औकार आमन्त्रितयः प्रभृष्टम् →

सम्बोधन के अन्त में स्थित औकार प्रभृष्ट कहलाता है।

जैसे - भानो, विष्णी इत्यादि।

### पदं चान्यः अपूर्वपदान्तमाक्ष्य →

अन्य पदों में स्थित हो तथा समास से पूर्व या अन्त में जो न हो ऐसा औकार प्रभृष्ट कहलाता है।

अवमे शुभमे त्वे अमी च प्रगृह्याः →

अवमे, शुभमे, त्वे, ऊँर अमी ये चारों भी प्रगृह्य संज्ञक होते हैं।

रिफित →

अवमा देष्ठी पञ्चमी नामि पूर्वः →

नामि (अ ऊँर आ से भिन्न स्वर वर्ण) के बाद आने वाले अवम वर्णों (ह, क्ष, ष, स, झ, ~क, ~प, अं) में पाँचवे (विसर्ग) को रिफित कहते हैं।

जैरु - अग्निरग्नि अन्मना, पूर्वोरहं शत्रुदः

महोदयोवर्षमितरौ यथोक्तम् →

महः ऊँर अपः से भिन्न अ अथवा ञ के बाद आने वाले विसर्ग की रिफित संज्ञा होती है।

अन्तीदान्तमन्तः →

अन्तः पद यदि अन्तीदान्त हो तो वह भी रिफित कहलाता है।

हेत्वाभासः	तर्कसङ्ग्रहस्य लक्षणम् उदाहरणञ्च	तर्कभाषा	न्यायसिद्धान्तमुक्तावली(कारि कावली)
१-सम्बन्धविचारः	१-साधारणः लक्षणम्-माध्याभाववदवृत्तिः साधारणोऽनैकान्तिकः उदाहरणम्- पर्वतो वह्निमान् प्रमेयत्वात्	नामान्तरम् – अनेकान्तिकः १-साधारणः लक्षणम्-पक्षमपक्षविपक्षवृत्तिः उदाहरणम्-शब्दो नित्यः प्रमेयत्वात्	नामान्तरम्-अनेकान्तः १-साधारणः- लक्षणम्-यः सपक्षे विपक्षे च भवेत् साधारणस्तु सः उदाहरणम्-नास्ति
	२-असाधारणः लक्षणम्- सर्वमपक्षविपक्ष- व्यावृत्तः पक्षमात्रवृत्तिः उदाहरणम्- शब्दो नित्यः शब्दत्वात्	२-असाधारणः लक्षणम्-यः सपक्षविपक्षाभ्यां व्यावृत्तः पक्ष एव वर्तते उदाहरणम् – भूः नित्या गन्धवत्त्वात्	२-असाधारणः लक्षणम्- यस्तूभयस्माद्व्यावृत्तः स चासाधारणो मतः उदाहरणम्- शब्दोऽनित्यः शब्दत्वात्
	३-अनुपमंहागी लक्षणम्- अन्वयव्यतिरेक- दृष्टान्तरहितः उदाहरणम्- सर्वमनित्यं प्रमेयत्वात्		३-अनुपसंहारी लक्षणम्- तथैवानुपमंहागी केवलान्वयविपक्षकः उदाहरणम्- सर्वम् अभिधेयं प्रमेयत्वात्
२- विरुद्धः	लक्षणम्- माध्याभावव्याप्तो हेतुर्विरुद्धः उदाहरणम्-शब्दो नित्यः कृतकत्वात्	लक्षणम्-साध्यविपर्ययव्याप्तो हेतुर्विरुद्धः उदाहरणम्- शब्दो नित्यः कृतकत्वात्	लक्षणम्-यः साध्यवति नैवाऽस्ति स विरुद्ध उदाहृतः उदाहरणम्-नास्ति
३-सत्प्रतिपक्षः	लक्षणम्- यस्य माध्याभावसाधकं हेत्वन्तरं विद्यते स सत्प्रतिपक्षः उदाहरणम्- शब्दो नित्यः श्रावणत्वात्,शब्दोऽनित्यः कार्यत्वात्	नामान्तरम्- प्रकरणसमः लक्षणम्- यस्य प्रतिपक्षभूतं हेत्वन्तरं विद्यते स प्रकरणसमः उदाहरणम्- शब्दोऽनित्यो नित्यधर्मानुपलब्धेः,शब्दो नित्योऽनित्यधर्मानुपलब्धेः	लक्षणम्- विरुद्धयोः परामर्शो हेत्वोः सत्प्रतिपक्षता उदाहरणम्- शब्दो नित्यः श्रावणत्वात्,शब्दोऽनित्यः कार्यत्वात्
४- असिद्धः	१-आश्रयासिद्धः उदाहरणम्- गगनारविन्दं	१-आश्रयासिद्धः लक्षणम्- यस्य हेतोरश्रयो	१-आश्रयासिद्धिः(पक्षासिद्धिः) लक्षणम्- पक्षामिदिर्यत्र पक्षो

	मुरभि अरविन्दत्वात् मरोजारविन्दवत्	नावगम्यते स आश्रयासिद्धः उदाहरणम्- गगनारविन्दं मुरभि अरविन्दत्वात् मरोजारविन्दवत्	भवेन्मणिमयो गिरिः उदाहरणम्- मणिमयः पर्वतो वह्निमान् धूमात्
	२-स्वरूपासिद्धः उदाहरणम्- शब्दो गुणश्चाधुपत्वात्	२-स्वरूपासिद्धः (भागासिद्धः) लक्षणम्- यो हेतुराश्रये नैवावगम्यते उदाहरणम्- सामान्यम् अनित्यं कृतकत्वात्	२-स्वरूपासिद्धिः लक्षणम्- हृदो द्रव्यं धूमवत्त्वादत्राऽमिदिरथाऽगग उदाहरणम्-हृदो द्रव्यं धूमवत्त्वाद्
	३-व्याप्यत्वासिद्धः लक्षणम्- सोपाधिको हेतुः व्याप्यत्वमिदः उदाहरणम्-पर्वतो धूमवान्वह्निमत्त्वात्	३-व्याप्यत्वासिद्धः लक्षणम्-यत्र हेतोर्व्याप्तिर्नावगम्यते उदाहरणम्-मः श्यामो मेत्रीतनयत्वात्	३-व्याप्यत्वासिद्धिः लक्षणम्- व्याप्यत्वमिदिरगग नीलधूमादिके भवेत् उदाहरणम्- नास्ति
५-बाधितः	लक्षणम्- यस्य माध्याभावः प्रमाणान्तरेण निश्चितः उदाहरणम्- वह्निग्नौ द्रव्यत्वात्	नामान्तरम् – कालात्ययापविष्टः लक्षणम्- यस्य प्रत्यक्षादिप्रमाणेन पक्षे माध्याभावः पश्चिद्धः उदाहरणम्-अग्निग्नौ कृतकत्वात्	नामान्तरम् – कालात्ययापविष्टः लक्षणम्- माध्यशून्यो यत्र पक्षस्त्यसौ बाध उदाहृतः । उदाहरणम्-उत्पत्तिकालीनघटः गन्धवान् पृथिवीत्वात्



शब्दों की व्युत्पत्तियाँ →

अर्थसंग्रह → [लींगाहिभास्कर]

"अथातो धर्मविलासा" †

अथ → वेदाध्ययनानन्तर्यवचनः ।

अतः → वेदाध्ययनस्य दृष्टार्थत्वं ।

धर्म का लक्षण →

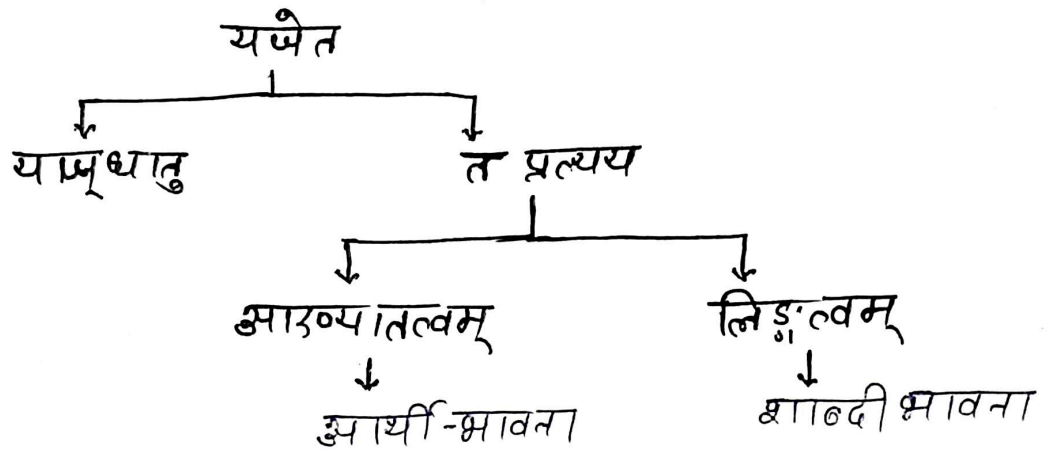
'यागादिरैव धर्मः' ।

'वेदप्रतिपाद्यः प्रयोजनवदर्थो धर्मः इति' ।

1. प्रयोजनवत् → "प्रयोजनं इति व्याप्तिवाङ्गाय ।"
2. वेदप्रतिपाद्यः → 'भौजनं दावतिव्याप्तिवाङ्गाय' ।
3. अर्थः → "अनर्थफलकत्वादनर्थस्मृते इत्येनादावतिव्याप्तिवाङ्गाय"

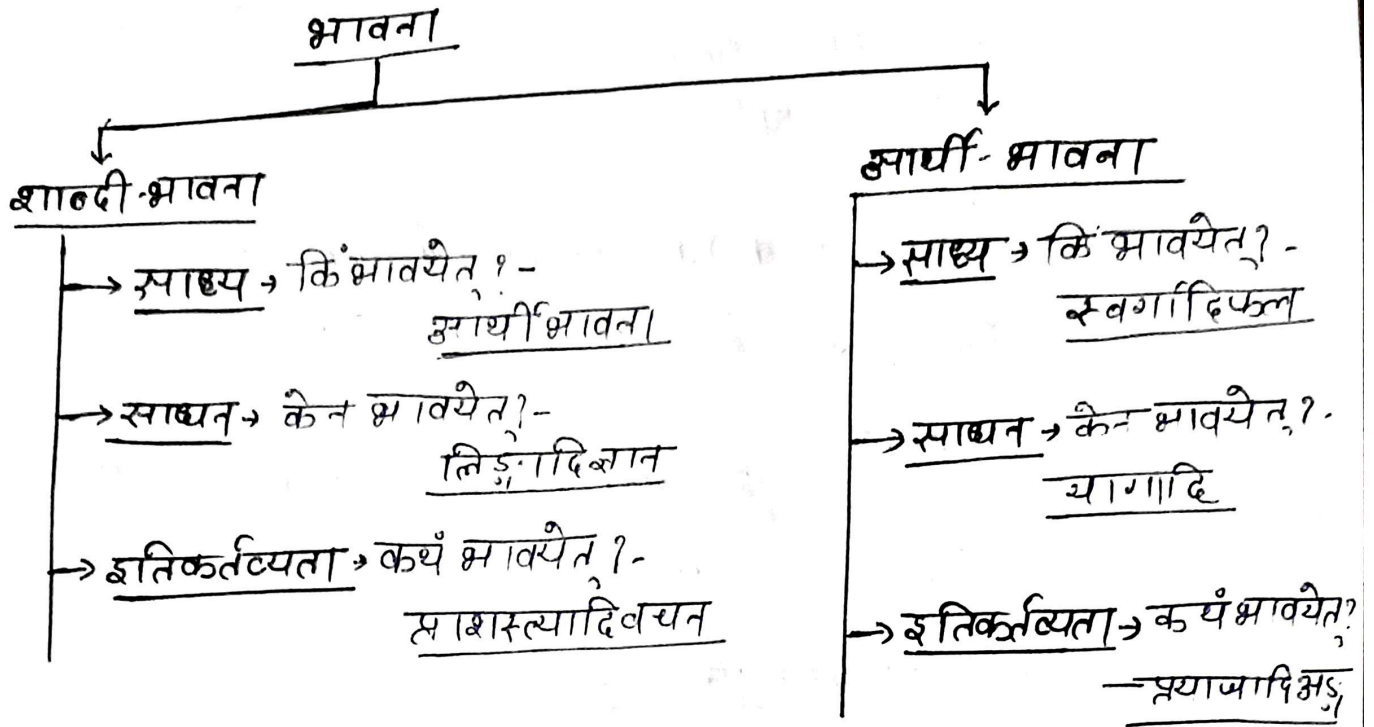
जैमिनी के अनुसार- धर्म → 'यौदनालक्षणीयधर्मः' ।

"यजैत स्वर्गकामः"



'आडव्यात् लिङ्गिन भावना उच्यते' ।

भावना → "भावनानाम् भवितुर्भवनात्तुक्कुली भावयितुर्भावात्  
विश्वीयः।"



वेदलक्षण → "अपौरुषेयं वाक्यं वेदः"

वेदके 5 प्रकार → 1. विधि 2. मन्त्र 3. नामधेय  
4. निषेध 5. उर्थवाद

विधि → 'तत्राज्ञातार्थज्ञापकी वेदभागी विधिः'

उदा → 'अग्निहोत्रं जुहुयात्स्वर्गकामः।'

→ गुण विधि → 'यत्र कर्म मानान्तरेण प्राप्तं तत्र तदुद्देशेन  
गुणमात्रं विध्यन्ते।'

उदा → 'दध्ना जुहोति।'

→ विशिष्ट-विधि → 'यत्र कर्म तूभयप्राप्तं तत्र विशिष्टं विध्यन्ते।'

उदा → 'सौमैव यजेत्।'

विधि → 4

1. उत्पत्ति विधि
2. विनियोग विधि
3. अवधिकार विधि
4. प्रयोग विधि

1. उत्पत्ति विधि → [तत्रकस्मिन्नङ्गमात्र बोधको विधिरुत्पत्तिविधिः]  
उदा० → अग्निहीत्रं जुहोति ।

2. विनियोग विधि → "अङ्गप्रधानसम्बन्धबोधको विधिविनियोगविधिः"  
उदा० → दध्ना जुहोति ।

हः सहायक प्रमाण →

1. सुति → 3 (i) विधात्री  
(ii) अविधात्री  
(iii) विनियोक्त्री → 3
1. विभक्तिरूपा → श्रीष्टिभिर्यजेत्
  2. रूपाविधानरूपा → पशुनायजेत्
  3. रूपपदरूपा →

2. लिङ्ग → शाब्दसामर्थ्यं लिङ्गम् ।

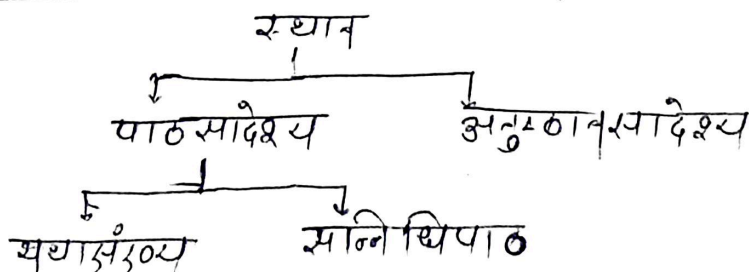
3. वाक्य → समाभिव्याहारी वाक्यम् ।

- क → 1. प्रकृति  
2. विकृति

4. प्रकरण → उभयाकाङ्क्ष प्रकरणम् ।

- ↳ 1. महाप्रकरण  
2. अवान्तरप्रकरण

5. स्थान → दृष्टासामान्यं स्थानम् ।



6. समाख्या - समाख्या योगिकः शाब्दः

- 1. वैदिकी → दौतृयमस
- 2. लौकिकी → ब्राह्मवर्णम्

विनियोग द्वारा विनियोजित अङ्गों के दो भेद →

- 1. सिद्धउप
- 2. क्रियाउप

1. सिद्धउप → 3

- 1. ज्जाति - यश्चुना यजेत ।
- 2. द्रव्य - ब्रीहि भियजेत ।
- 3. संख्या - रुक्हात्य, गवासीमं ।

2. क्रियाउप → 2

- 1. गुणकर्म
- 2. प्रधानकर्म

1. सन्निपत्योपकाटक → 'कर्मसु प्रत्याद्युद्देशेन विधीयमानं  
कर्म सन्निपत्योपकाटकम् ।'

यथा → अवघात प्रोक्षण

2. आडादुपकाटक → 'द्रव्याद्यनुद्दिश्य केवलं विधीयमानं  
कर्म आडादुपकाटकम् ।'

3 → प्रयोग विधि → प्रयोग प्रशुभ्रवर्गीयकी विधिः प्रयोगविधिः

→ 'अङ्गानां क्रमवर्गीयकी विधिः'

क्रमरूपउप → 'क्रमो नाम विततिविशेषः पूर्वपर्यन्तरेण वा ।'

क्रम-निर्णायक 6 प्रमाण →

[श्रुति - अर्थ - पाठ - स्थान - मुख्य - प्रवृत्ति]



#### 4) अधिकार-विधि →

‘कर्मफलव्यपन्न इव । म्य वीथकी विधिः अधिकार-  
-विधिः ।’

#### [२३] मन्त्र →

‘प्रयोगसमवेतार्थरमाङ्क मन्त्राः ।’

1. अपूर्व विधि → ‘प्रमाणान्तरेणाप्राप्तस्य प्रापकी विधिः  
उदा. - ~~पितृपूजा~~ <sup>अनिपूर्व विधिः ।</sup> यजेत् स्वर्गकामः ।

2. नियम विधि → ‘पक्षेऽप्राप्तस्य प्रापकी विधिः नियम विधिः ।’  
उदा - ग्रीहीन् अवदन्ति ।

3. पडिसंख्या विधि → ‘उभयौश्च युगायतप्राप्तावितरुल्यावृत्तिपडौ  
विधिः पडिसंख्या विधिः ।

उदा. - पञ्च पञ्च नडवा म्दयाः ।  
→ 2 भेद

(1) श्रौती

(2) लाक्षणिकी

#### लाक्षणिकी पडिसंख्या के 3 दोष →

1. श्रुतदानि
2. अश्रुतकल्पना
3. प्राप्तबाध

[3] नामधेय → 4

(1) मत्वर्थलक्षणामयात् → उद्धिदा यजेत पशुकामः।

(2) वाक्यभेदमयात् → चित्रया यजेत पशुकामः।

(3) तत्प्रत्ययशास्त्रात् → अग्निर्हीत्रं जुहोति।

(4) तद्वयप्रदेशात् → श्यैतेनाभि चरन् यजेत।

[4] निषेध → पुत्रस्य निवर्तकं वाक्यं निषेधः।

[5] अर्थवाद → प्राशस्त्यनिन्दान्यतरूपं वाक्यमर्थवादः।

↳ 2 भेद 1. विधिशीघ्र

2. निषेध शेष

→ अर्थवाद → 3 भेद

1. गुणवाद → आदित्यो यूपः।

2. अनुवाद → अग्निर्हिमस्य भेषजम्।

3. भूतार्थवाद → इन्द्रो वृत्राय वज्रमुदथरन्।

## योग-सूत्र

लेखक → पतंजलि

पाद → 4

1. समाधि → 51

2. साधन → 55

3. विभूति → 55

4. कैवल्य → 34

Total → 195 सूत्र

अथ योगानुशासनम्

चित्तभूमियाँ → 5

1. क्षिप्त

2. मूढ

3. विक्षिप्त

4. एकाग्र

5. निश्चल

चित्तवृत्तियाँ → 5

1. प्रमाण → उपलब्ध, अनुमान, आगम

2. विपर्यय → 5

(1) अविद्या

(2) अहमिता

(3) राग

(4) द्वेष

(5) अस्मिनिवेश

3. विकल्प

4. निद्रा

5. स्मृति

ईश्वर → 'क्लेशा कर्म विपाकाश्चैव उपदानृष्टः पुण्यविशीलः'  
ईश्वरः ।

क्लेश → 5

1. अविद्या
2. अस्मिता
3. राग
4. द्वेष
5. अभिनिवेश

कर्म - कुशल कुशलानि कर्माणि ।

विपाक - 'कर्मफलं विपाकः' ।

आशय - 'तदनुगुणा वासना आशयाः' ।

योगाङ्ग → 8

1. यम → 5 (1) अहिंसा, (2) सत्य, (3) अस्तेय, (4) ब्रह्मचर्य, (5) ममपटिग्रह
2. नियम → 5 (1) शौच, (2) सतीष, (3) तप, (4) स्वाध्याय, (5) ईश्वरप्राणिध्यान
3. आसन
4. प्राणायाम → शैचक, पूरक, कुम्भक
5. प्रत्याहार
6. धारणा
7. ध्यान
8. समाधि → 2
  1. सम्प्रज्ञात
  2. असम्प्रज्ञात



(1) सम्प्रज्ञात समाधि → सभीज समाधि / अविकल्पक समाधि

↳ 4

1. वितर्कानुगत
2. विद्यादानुगत
3. श्रान्तानुगत
4. श्रान्तिमानुगत

(2) असम्प्रज्ञात समाधि → तस्यापि निरोधे सर्व निरोधनिर्वीज  
समाधिः 1

→ कैवल्य → 'तस्य हेतुद्वयं तदभावात्संयोगाभावी  
दानं तददृशीः कैवल्यम्'

→ विवेकव्यतिरिक्त्वान्नोपायः ।

चिन्त के विघ्न उपका करने वाले विघ्न → 9

- |            |                        |
|------------|------------------------|
| 1. व्याधि  | 1. भ्रान्ति दर्शन      |
| 2. रूपान   | 2. उपलब्ध भू मिक्तत्व  |
| 3. रसश्चय  | 3. श्रान्तवास्थितत्त्व |
| 4. प्रमाद  |                        |
| 5. उपालस्य |                        |
| 6. अविरति  |                        |

विघ्नों के साधनी → 5

- |              |              |
|--------------|--------------|
| 1. दुःख      | 1. दौर्मनस्य |
| 2. अङ्गकम्पन | 2. श्वाहन    |
| 3. प्रशवास   |              |

## ब्रह्मसूत्र

लैखक → वादरायण

अध्याय → 4 , पाद → 16

<u>अध्याय नाम</u>	<u>सूत्रसंख्या</u>	<u>अधिकरण सं०</u>
समन्वय	134	39
वृत्तिविहीन	157	47
साधन	86	67
फल	78	30
<u>Total-</u>	<u>555</u>	<u>191</u>

## अनुमिति के घटक

व्यापारस्तु परामर्शः  
करणं व्याप्तिधीर्भवेत् ॥66॥

अनुमायां ज्ञायमानं  
लिङ्गं तु करणं न हि।  
अनागतादिलिङ्गेन न  
स्यादनुमितिस्तदा ॥67॥

## परामर्श

व्याप्यस्य पक्षवृत्तित्व-  
धीः परामर्श उच्यते॥

**पूर्वपक्ष व्याप्ति**

व्याप्तिः साध्यवद-  
न्यस्मिन्नसम्बन्ध  
उदाहृतः॥६८॥

**सिद्धान्त व्याप्ति**

अथवा हेतुमन्निष्ठ-  
विरहाप्रतियोगिना॥  
साध्येन हेतोरैकाधि-  
करण्यं व्याप्तिरुच्यते

॥६९॥



## पक्षधर्मता

सिषाधायिषया शून्या  
सिद्धिर्यत्र न तिष्ठति।  
स पक्षस्तत्र वृत्तित्व-  
ज्ञानादनुमितिर्भवेत्

॥70॥

## हेत्वाभास

अनैकान्तो विरुद्धश्चा-  
ऽप्यसिद्धः प्रतिपक्षितः।  
कालात्ययापदिष्टश्च  
हेत्वाभासास्तु पञ्चधा

॥71॥

**अनैकान्त हेत्वाभास**

आद्यः साधारणस्तु  
स्यादसाधारणकोऽपरः।  
तथैवाऽनुपसंहारी  
त्रिधाऽनैकान्तिको भवेत्  
॥७२॥

**साधारण अनैकान्त**

यः सपक्षे विपक्षे च  
भवेत्साधारणस्तु सः।

असाधारण अनैकान्त

यस्तूभयस्माद्व्यावृत्तः  
सत्त्वसाधारणो मतः

॥73॥

अनुपसंहारी अनैकान्त

तथैवाऽनुपसंहारी  
केवलान्वयिपक्षकः।



**विरुद्ध हेत्वाभास**

यः साध्यवति नैवाऽस्ति  
स विरुद्ध उदाहृतः॥74॥

**असिद्ध हेत्वाभास**

आश्रयासिद्धिराद्या स्यात्,  
स्वरूपासिद्धिरप्यथा  
व्याप्यत्वासिद्धिरपरा  
स्यादसिद्धिरतस्त्रिधा

॥75॥

आश्रयासिद्धि

पक्षासिद्धिर्यत्र पक्षो  
भवेन्मणिमयो गिरिः।

स्वरूपासिद्धि

हृदो द्रव्यं धूमवत्त्वा-  
दत्राऽसिद्धिरथाऽपरा

॥७६॥

व्याप्यत्वासिद्धि

व्याप्यत्वासिद्धिरपरा  
नीलधूमादिके भवेत्।

सत्प्रतिपक्ष

विरुद्धयोः परामर्शे  
हेत्वोः सत्प्रतिपक्षता

॥७७॥

---

**कालात्ययापदिष्ट**

साध्यशून्यो यत्र पक्ष-  
स्त्वसौ बाध उदाहृतः।  
उत्पत्तिकालीनघटे  
गन्धादिर्यत्र साध्यते

॥78॥

---



## व्याकरण भाषाचार्यो का परिचय →

### 1→ पाणिनि [ 550 ई० पू० ]

ग्रन्थ → अष्टाध्यायी, वृत्तिसूत्र,  
शातुपाठ, गणपाठ, उणादिपाठ,  
पाणिनीयलिङ्गानुशासन, आम्बवती विजय,  
द्विपकीर्षा,  
पाणिनि शिक्षा

### 2→ कात्यायन [ 400 ई० पू० ]

ग्रन्थ → 1400 वार्तिक,  
स्वर्गारोहण काव्य, भ्राजरीतकश्लोक,  
कात्यायनस्मृति, सामुद्रिक ग्रन्थ,  
उभयसाङ्गिभाषण, छन्दशास्त्र/साहित्य शास्त्र

### 3→ पतंजलि [ 150 ई० पू० ]

ग्रन्थ → महाभाष्य,  
सिद्धान्तसादावली, चउकपडिका,  
महानन्द काव्य, योगसूत्र

महाभाष्य के टीकाकार →

### 4→ भट्टहारी [ 340 ई० ]

ग्रन्थ → गव्यपदीय, महाभाष्यदीपिका,  
नीतिशातक, शृङ्गाडशातक, वैराग्यशातक,  
जैमिनीय मीमांसावृत्ति,  
वैदान्तसूत्रवृत्ति, शब्दशातुसमीक्षा

2- कैर्यट [1035 ई०]

↳ महाभाष्यप्रदीप

→ प्राणपणा रामक लघुवृत्ति → पुण्डरीकदेव

चिन्तामणि → छानेश्वर

सूक्तिरत्नाकर → शेषनाथायण

→ महाभाष्यप्रदीप के व्याख्याकार →

नागीशभट्ट [1400 ई०]

1- लघुशतदेन्दुशेखर

2. बृहच्छतदेन्दुशेखर

3. परिभाषेन्दुशेखर

4. लघुमञ्जूषा

5. परमलघुमञ्जूषा → महाभाष्यप्रदीपदीप्त

6. स्फोटवाद

7. महाभाष्यप्रत्याख्यातसंग्रह

8. वैयाकरणसिद्धान्तमञ्जूषा

9. वैयाकरणसिद्धान्तकविका

→ [वैद्यनाथ पायगुण्डे ने महाभाष्यप्रदीपदीप्त पर -  
दाया रामकटीका लिखी।]

अष्टाध्यायी के वृत्तिका →

→ अयादित्य वामन [660 ई०] →

काशिका

→ भट्टोजिदीक्षित [1450 ई०]

वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी

शब्दकौमुदम्

प्रौढमनीषमा

लिङ्गातुष्टासनवृत्ति

वैयाकरणमतौ नमज्जनम्

प्रौढमनीषमा

विमलमति → भागवति

मैत्रेयसंहिता → दुर्घटवृत्ति

पुण्डरीकमन्दिर → भाषावृत्ति

शङ्खदेव → दुर्घटवृत्ति

अप्ययदीप्ति → सूत्रप्रकाश

नीलकण्ठ राजपेयी → पाणिनीय दीपिका

शब्दकोस्तुभ के टीकाकांड →

1. नागीश → विघ्नपादी

2. वैद्यनाथ पायगुंडे → प्रभा

3. विद्यानाथ शुक्ल → उद्योत

4. राजवैद्य चन्द्राचार्य → प्रभा

5. कृष्णामित्र → भावप्रदीप

6. ~~शब्दकोस्तुभ~~ पूषण → भास्करदीप्ति

3. काशिका के व्याख्याकांड →

काशिकाविवरणपाठिका → जिनैन्द्रब्राह्म [ 650 ई० ]

हनुमन्त मिश्र → पदमञ्जरी

पाणिनि व्याकरण के प्रक्रिया ग्रन्थकाऽ →

1. धर्मकीर्ति → रत्नावली
2. प्राक्रियारत्न
3. विमलसरस्वती
4. रामचन्द्र → प्राक्रियाकीर्तुदी
5. महोच्चिदीक्षित → सिद्धान्तकीर्तुदी

सिद्धान्तकीर्तुदी के व्याख्याता →

1. प्रौढमनीरमा - महोच्चिदीक्षित  
→ बृहच्छब्दरत्न  
→ लघुशाब्दरत्न (हडिदीक्षित)
2. तत्त्वबोधिनी - ज्ञानेन्द्र सरस्वती
3. सुबोधिनी → नीलकण्ठ बाजपेयी
4. तत्त्वदीपिका → रामानन्द
5. रामकृष्णभट्ट → सिद्धान्तउल्लास
6. लघुशाब्देन्दुशेखर → नागेशभट्ट
7. बृहच्छब्देन्दुशेखर → नागेशभट्ट
8. पूर्णिमा → रङ्गनाथयन्वा
9. बालमनीरमा → वासुदेव बाजपेयी
10. रत्नावली → कृष्ण मित्र (शाब्दकीर्तुष पत्र भावप्रदीप)



जैन-द्र [650 ई०] → [पुल्यपाद देवबन्दी]

↓ जैन-द्र व्याकरण, शब्दावतारन्यास

जैन-द्र व्याकरण के व्याख्याता →

1. देवबन्दी - जैन-द्र सारवर्णक न्यास
2. अभयानन्दी - महावृत्ति
3. प्रभायन्द्र - शब्दार्थभोज व्याकरण न्यास
4. महाचन्द्र - लघु जैन-द्र वृत्ति

→ गुणानन्दी → शब्दार्णव

→ शाकटायन [9 वीं शती - 10 वीं शती ई०]  
(पात्यकीर्ति)

↓ शाकटायन व्याकरण, घणादिसूत्र,  
आहुपाठ, गणपाठ, लिङ्गातुशासन

→ हेमचन्द्र सूत्रि [1145-1219 ई०]

सिद्ध हेमशब्दानुशासनम्,

काव्यानुशासनम्,

छन्दोऽनुशासनम्

हेमचन्द्र → तीन टीकाएँ

→ लघ्वी वृत्ति

→ मध्य वृत्ति

→ बृहती वृत्ति

# पाणिनीय-शिक्षा

भाचार्यः → पाणिनि

श्लोकः → 60

वर्णसंख्या → 63 / 64

स्वः → 21

व्यञ्जनः → 25

यकाडादि (मन्तस्थ, उष्म) → 8

यमः → 4

मनुस्वाः → 1 , विसर्गः → 1

पिठामूलीयः उपध्मानीयः → 2

प्लुत लृकाः → 1

वर्णभेदः → 5

1. स्वः , 2. कालः , 3. स्थानः

4. व्याप्यन्तः प्रत्ययः , 5. बाह्यः प्रत्ययः

स्वः → उदात्तस्वः → निषाच्च, गान्ध्याः

अनुदात्तः → ऋषभः, धैवतः

स्वरितः → षड्जः, महयमः, पञ्चमः

वर्णव्याकरणस्थानः → 8

[अष्टौ स्थानानि वर्णानामुः कण्ठः शिङ्गुतथा।

पिठामूलं च दन्तस्थ नासिकीकौष्ठौ च तालु च ॥]

## उष्मगति भेद / विसर्ग भेद → 8

[ " औष्मत्वस्य विवृतिश्च शाक्या रेफ इव च ।  
जिह्वामूलमुपह्मा च गतिरष्टविधाऽऽत्मनः ॥ ]

### वर्णोच्चादण स्थान →

कण्ठ → अ, इ . तालु → ए, य, शा, चवर्ग

ओष्ठ → उ, पवर्ग , मूर्धा → ऋ, ॠ, ऌ, ॡ, व. टवर्ग

दन्त → लृ, लं, र, तवर्ग

जिह्वामूल → कवर्ग

दन्तीवृ → व

कण्ठतालु → ऋ, ॠ

ओष्ठौष्ठ → औ, ॡ

### अयौगवाह वर्ण → 6

(1.) अनुस्वारः

(2.) विसर्गः

(3.) जिह्वामुलीयः

(4.) उपह्मादीयः

(5.) यमः

(6.) नासिका

### अधम पाठक →

[ " गीती शीघ्री शिडः कम्पी तथा लिखितपाठकः ।  
अनर्थलोत्पन्नकण्ठस्य घडेति पाठकाधमाः ॥ ]

### पाठक गुण →

[ " माधुर्यमहृदय किति : पदच्छेदस्तु सुस्वरः ।  
धैर्यं लयसमर्थं च घडेति पाठका गुणाः ॥ ]

दस्तमै स्वड निर्देशा →

[ "उदान्तं प्रदेक्षिनी विद्यात्प्रचयं मध्यतीक्ष्णम् ।  
निहतं तु कनिष्ठिक्यां स्वडितोपकनिष्ठिकाम् ॥ ]

पदशाखा → 9

"अन्तीदान्तमाधुदान्तमुदान्तमनुदान्तं नीयस्वडितम् ।  
मध्योदान्तं स्वडितं द्युदान्तं त्र्युदान्तमिति नवपदशाखा ॥ ]

पदशाखा उदा०

- |   |                                  |
|---|----------------------------------|
| 1. अग्निः - अन्तीदान्त                  | 7. स्व. - स्वडित                 |
| 2. सोम - आधुदान्त                       | 8. बृहस्पति - द्युदान्त          |
| 3. प्र - उदान्त                         | 9. इन्द्रावृहस्पति - त्र्युदान्त |
| 4. वे - अनुदान्त                        |                                  |
| 5. वीर्यम् - अनुदान्तस्वडित (नीयस्वडित) |                                  |
| 6. हविषाम् - मध्योदान्त                 |                                  |

दस्तकार्य निर्देशा →

"अनुदान्ती हृदि लेयी मूर्धन्युदान्त उदाहृतः ।  
स्वडितः कर्णमूलीयः सर्वाङ्ग्यै प्रचयः स्मृतः ॥ ]

→ [ चापस्तु वदते मात्रां त्रिमात्रं चैव वायस्यः ।  
क्षीरवी रीति त्रिमात्रं तु नकुलस्त्वर्धमात्रकम् ॥ ]



## ॥ शास्त्रारम्भप्रतिज्ञाधिकरणम् ॥

॥ अथ शब्दानुशासनम् ॥

अथेत्ययं शब्दोऽधिकारार्थः प्रयुज्यते । शब्दानुशासनं नाम शास्त्रमधिकृतं वेदितव्यम्  
॥

## ॥ अनुशासनीयशब्दनिर्णयाधिकरणम् ॥

केषां शब्दानाम् ?

लौकिकानां वैदिकानां च । तत्र लौकिकास्तावत्- गौरश्वः पुरुषो हस्ती शकुनिः मृगो  
ब्राह्मण इति । वैदिकाः खल्वपि- शन्नो देवीरभिष्टये (अ.सं. 1, 1, 1), इषे त्वोर्जे त्वा  
(तै.सं. 1, 1, 1, 1), अग्निमीले पुरोहितम् (ऋ. 1, 1, 1), अग्न आयाहि वीतये (सा. सं.  
1, 1, 1) इति ॥

अथ गौरित्यत्र कः शब्दः ?

किं यत्तत्सास्नालाङ्गूलककुदखुरविषाण्यर्थरूपं स शब्दः ?

नेत्याह । द्रव्यं नाम तत् ॥

यत्तर्हि तदिङ्गितं चेष्टितं निमिषितमिति, स शब्दः ?

नेत्याह । क्रिया नाम सा ।।

यत्तर्हि तच्छुक्लो नीलः कपिलः कपोत इति स शब्दः ?

नेत्याह । गुणो नाम सः ।।

यत्तर्हि तद्भिन्नेष्वभिन्नं छिन्नेष्वच्छिन्नं सामान्यभूतं स शब्दः ?

नेत्याह । आकृतिर्नाम सा ।।

कस्तर्हि शब्दः ?

येनोच्चारितेन सास्नालाङ्गूलककुदसुरविषाणिनां सम्प्रत्ययो भवति स शब्दः ।।

अथवा प्रतीतपदार्थको लोके ध्वनिः शब्द इत्युच्यते। तद्यथा- शब्दं कुरु, मा शब्दं कार्षीः, शब्दकारी अयं माणवक इति ध्वनिं कुर्वन्नेवमुच्यते। तस्माद् ध्वनिः शब्दः ।।

॥ शब्दानुशासनशास्त्रप्रयोजनाधिकरणम् ॥

॥ मुख्यप्रयोजनानि ।।

कानि पुनः शब्दानुशासनस्य प्रयोजनानि?

रक्षोहागमलघ्वसन्देहाः प्रयोजनम् ।।

॥ रक्षापदार्थनिरूपणभाष्यम् ।।

रक्षार्थं वेदानामध्येयं व्याकरणम्- लोपागमवर्णविकारज्ञो हि सम्यग्वेदान् परिपालयिष्यतीति ।।

॥ ऊहपदार्थनिरूपणभाष्यम् ।।

ऊहः खल्वपि- न सर्वैर्लिङ्गैर्न च सर्वाभिर्विभक्तिभिर्वेदे मन्त्रा निगदिताः। ते चावश्यं यज्ञगतेन पुरुषेण यथायथं विपरिणमयितव्याः। तान्नावैयाकरणः शक्नोति यथायथं विपरिणमयितुम्। तस्मादध्येयं व्याकरणम् ।।

## ॥ आगमपदार्थनिरूपणभाष्यम् ॥

आगमैः खल्वपि- ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मः षडङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च इति ।  
प्रधानं च षट्स्वङ्गेषु व्याकरणम् । प्रधाने च कृतो यत्नः फलवान्भवति ॥

## ॥ लघुपदार्थनिरूपणभाष्यम् ॥

लघ्वर्थं चाध्येयं व्याकरणम्- ब्राह्मणेनावश्यं शब्दा ज्ञेया इति । न चान्तरेण  
व्याकरणं लघुनोपायेन शब्दाः शक्या ज्ञातुम् ॥

## ॥ असन्देहपदार्थनिरूपणभाष्यम् ॥

असन्देहार्थं चाध्येयं व्याकरणम् । याज्ञिकाः पठन्ति- स्थूलपृषतीम्  
आग्निवारुणीमनद्वाहीमालभेत इति । तस्यां सन्देहः- स्थूला चासौ पृषती च  
स्थूलपृषती, स्थूलानि पृषन्ति यस्याः सेयं स्थूलपृषतीति । तां नावैयाकरणः  
स्वरतोऽध्यवस्यति- यदि पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वं ततो बहुव्रीहिः, अथ  
समासान्तोदात्तत्वं ततस्तत्पुरुष इति ॥

## ।। आनुषङ्गिकप्रयोजनानि ।।

इमानि च भूयः शब्दानुशासनस्य प्रयोजनानि- १-तेऽसुराः। २-दुष्टः  
शब्दः। ३-यदधीतम् । ४-यस्तु प्रयुङ्क्ते। ५-अविद्वांसः। ६-विभक्तिं  
कुर्वन्ति। ७-यो वा इमाम्। ८-चत्वारि। ९-उत त्वः। १०- सक्तुमिव।  
११- सारस्वतीम्। १२- दशम्यां पुत्रस्य। १३- सुदेवो असि वरुण इति ।।

## ।। १. तेऽसुराः ।।

तेऽसुरा हेलयो हेलय इति कुर्वन्तः पराबभूवुः। तस्माद् ब्राह्मणेन न  
म्लेच्छितवै नापभाषितवै। म्लेच्छो ह वा एष यदपशब्दः। म्लेच्छा मा  
भूमेत्यध्येयं व्याकरणम्। तेऽसुराः ।।



## ॥२. दुष्टः शब्दः ॥

दुष्टः शब्दः स्वरतो वर्णतो वा मिथ्या प्रयुक्तो न तमर्थमाह। स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात् ॥ इति

॥

दुष्टाञ्छब्दान्मा प्रयुङ्क्ष्महीत्यध्येयं व्याकरणम्। दुष्टः शब्दः ॥

## ॥३. यदधीतम् ॥

यदधीतमविज्ञातं निगदेनैव शब्ध्यते। अनग्नाविव शुष्कैधो न तज्ज्वलति कर्हिचित् ॥ तस्मादनर्थकं माधिगीष्महीत्यध्येयं व्याकरणम्। यदधीतम् ॥

## ॥४. यस्तु प्रयुङ्क्ते ॥

यस्तु प्रयुङ्क्ते कुशलो विशेषे शब्दान् यथावद् व्यवहारकाले।  
सोऽनन्तमाप्नोति जयं परत्र वाग्योगविद् दुष्यति चापशब्दैः ॥

कः ? वाग्योगविदेव ॥ कुत एतत् ?

यो हि शब्दाञ्जानात्यपशब्दानप्यसौ जानाति । यथैव हि शब्दज्ञाने  
धर्मः, एवमपशब्दज्ञानेऽप्यधर्मः । अथ वा भूयानधर्मः प्राप्नोति ।  
भूयांसोऽपशब्दाः, अल्पीयांसः शब्दाः इति । एकैकस्य हि शब्दस्य  
बहवोऽपभ्रंशाः । तद्यथा- गौरित्यस्य शब्दस्य गावी गोणी गोता  
गोपोतलिकेत्येवमादयोऽपभ्रंशाः । अथ योऽवाग्योगवित्, अज्ञानं तस्य  
शरणम् ॥

विषम उपन्यासः। नात्यन्तायाऽज्ञानं शरणं भवितुमर्हति । यो ह्यजानन् ब्राह्मणं  
हन्यात् सुरां वा पिबेत्सोऽपि मन्ये पतितः स्यात् ॥ एवं तर्हि-  
सोऽनन्तमाप्नोति जयं परत्र वाग्योगविद् दुष्यति चापशब्दैः ॥  
कः ? अवाग्योगविदेव । अथ यो वाग्योगविद्, विज्ञानं तस्य शरणम् ॥ क्व  
पुनरिदं पठितम् ? भ्राजा नाम श्लोकाः ॥ किं च भोः श्लोका अपि  
प्रमाणम् ? किं चातः ? यदि श्लोका अपि प्रमाणम्, अयमपि श्लोकः  
प्रमाणं भवितुमर्हति-

यदुदुम्बरवर्णानां घटीनां मण्डलं महत्।

पीतं न गमयेत्स्वर्गं किं तत् क्रतुगतं नयेत् ॥ इति।

प्रमत्तगीत एष तत्रभवतः। यस्त्वप्रमत्तगीतस्तत्प्रमाणम् ॥ यस्तु प्रयुङ्क्ते ॥

### ॥५. अविद्वांसः ॥

अविद्वांसः प्रत्यभिवादे नाम्नो ये न प्लुतिं विदुः।

कामं तेषु तु विप्रोष्य स्त्रीष्विवायमहं वदेत् ॥

अभिवादे स्त्रीवन्मा भूमेत्यध्येयं व्याकरणम्। अविद्वांसः ॥

### ॥६. विभक्तिं कुर्वन्ति ॥

याज्ञिकाः पठन्ति- प्रयाजाः सविभक्तिकाः कार्या इति। न चान्तरेण  
व्याकरणं प्रयाजाः सविभक्तिकाः शक्याः कर्तुम्। विभक्तिं कुर्वन्ति ॥

### ॥७. यो वा इमाम् ॥

यो वा इमां पदशः स्वरशोऽक्षरशश्च वाचं विदधाति स आर्त्विजीनो  
भवति। ~~आर्त्विजीनाः~~ स्यामित्यध्येयं व्याकरणम्। यो वा इमाम् ॥

---

## ॥८. चत्वारि ॥

चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।  
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यान् आविवेश ॥ इति।

चत्वारि शृङ्गाणि। चत्वारि पदजातानि  
नामाख्यातोपसर्गनिपाताश्च। त्रयो अस्य पादाः- त्रयः काला-  
भूतभविष्यद्वर्तमानाः। द्वे शीर्षे- द्वौ शब्दात्मानौ नित्यः कार्यश्च।  
सप्तहस्तासो अस्य- सप्त विभक्तियः। त्रिधा बद्धः- त्रिषु स्थानेषु  
बद्ध- उरसि कण्ठे शिरसीति । वृषभो वर्षणात्। रोरवीति- शब्दं  
करोति ॥ कुत एतत् ? रौतिः शब्दकर्मा ॥

महो देवो मर्त्यान् आविवेशेति । महान् देवः शब्दः । मर्त्या मरणार्धम्माणो  
मनुष्यास्तानाविवेश । महता देवेन नः साम्यं यथा स्यादित्यध्येयं  
व्याकरणम् ॥

अपर आह- चत्वारि वाक्परिमिता पदानि तानि विदुर्ब्राह्मणा ये मनीषिणः।  
गुहा त्रीणि निहिता नेङ्गयन्ति तुरीयं वाचो मनुष्या वदन्ति ॥  
चत्वारि वाक्परिमितानि पदानि- चत्वारि पदजातानि  
नामाख्यातोपसर्गनिपाताश्च। तानि विदुर्ब्राह्मणा ये मनीषिणः। मनस  
इषिणो मनीषिणः। गुहा त्रीणि निहिता नेङ्गयन्ति। गुहायां त्रीणि  
निहितानि नेङ्गयन्ति- न चेष्टन्ते। न निमिषन्तीत्यर्थः। तुरीयं वाचो मनुष्या  
वदन्ति। तुरीयं वा एतद्वाचो यन्मनुष्येषु वर्तते चतुर्थमित्यर्थः। चत्वारि ॥



## ॥ ९. उत त्वः ॥

उत त्वः पश्यन्न ददर्श वाचमुत त्वः शृण्वन्न शृणोत्येनाम्।

उतो त्वस्मै तन्वं विसस्त्रे जायेव पत्य उसती सुवासाः ॥

उत त्वः अपि खल्वेकः पश्यन्नपि न पश्यति वाचम्। अपि  
खल्वेकः शृण्वन्नपि न शृणोत्येनाम् इति अविद्वांसमाहार्धम्।

उतो त्वस्मै तन्वं विसस्त्रे- तनुं विवृणुते। जायेव पत्य उशती  
सुवासाः। तद्यथा-- जाया पत्ये कामयमाना सुवासाः स्वमात्मानं  
विवृणुते एवं वाग् वाग्विदे स्वात्मानं विवृणुते। वाङ्मनो  
विवृणुते।

---

## ।।१०.सक्तुमिव ।।

सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत। अत्रा सखायः

सख्यानि जानते भद्रैषां लक्ष्मीः निहिताऽधि वाचि ।।

सक्तुः सचतेर्दुर्धावो भवति। कसतेर्वा विपरीताद् विकसितो भवति। तितउ  
परिपवनं भवति। ततवद्वा- तुन्नवद्वा। धीरा- ध्यानवन्तः। मनसा- प्रज्ञानेन।

वाचमक्रत- वाचमकृषत।

अत्रा सखायः सख्यानि जानते। अत्र सखायः सन्तः सख्यानि जानते।

क्व ? य एष दुर्गो मार्ग एकगम्यो वाग्विषयः ।। के पुनस्ते ? वैयाकरणाः

।। कुत एतत् ?

भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिता अधि वाचि । एषां वाचि भद्रा लक्ष्मीर्निहिता भवति।

लक्ष्मीर्लक्षणात् भासनात्परिवृढा भवति। सक्तुमिव ।।

---

### ॥११. सारस्वतीम् ॥

याज्ञिकाः पठन्ति- आहिताग्निरपशब्दं प्रयुज्य प्रायश्चित्तीयां  
सारस्वतीमिष्टिं निर्वपेत्। प्रायश्चित्तीया मा भूमेत्यध्येयं व्याकरणम्।  
सारस्वतीम् ॥

### ॥१२. दशम्यां पुत्रस्य ॥

याज्ञिकाः पठन्ति- दशम्युत्तरकालं पुत्रस्य जातस्य नाम विदध्याद्  
घोषवदाद्यन्तरन्तःस्थमवृद्धं त्रिपुरुषानूकमनरिप्रतिष्ठितम्। तद्धि  
प्रतिष्ठिततमं भवति। द्व्यक्षरं चतुरक्षरं वा नाम कृतं कुर्यान्न तद्धितम् इति।  
न चान्तरेण व्याकरणं कृतस्तद्धिता वा शक्या विज्ञातुम्। दशम्यां पुत्रस्य ।

### ॥१३. सुदेवो असि वरुण ॥

सुदेवो असि वरुण यस्य ते सप्त सिन्धवः। अनुक्षरन्ति काकुदं  
सूर्यं सुषिरामिव ॥ सुदेवो असि वरुण- सत्यदेवोऽसि। यस्य  
ते सप्त सिन्धवः- सप्त विभक्तयः। अनुक्षरन्ति काकुदम्।  
काकुदम्- तालु। काकुर्जिहा, सास्मिन्नुद्यत इति काकुदम्।  
सूर्यं सुषिरामिव। तद्यथा- शोभनामूर्मिं सुषिरामग्निरन्तः  
प्रविश्य दहति, एवं ते सप्त सिन्धवः- सप्त  
विभक्तयस्ताल्वनुक्षरन्ति। तेनासि सत्यदेवः। सत्यदेवाः  
स्यामेत्यध्येयं व्याकरणम्। सुदेवो असि ॥



## शब्दब्रह्म का स्वरूप

अनादिनिधनं ब्रह्म  
शब्दतत्त्वं यदक्षरम् ।  
विवर्ततेऽर्थभावेन  
प्रक्रिया जगतो यतः  
॥ १.१ ॥

एकमेव यदाम्नातं  
भिन्नं शक्तिव्यापाश्रयात्  
अपृथक्त्वेऽपि शक्तिभ्यः  
पृथक्त्वेनेव वर्तते  
॥ १.२ ॥

अध्याहितकलां यस्य  
कालशक्तिमुपाश्रिताः ।  
जन्मादयो विकाराः  
षड्भावभेदस्य योनयः  
॥ १.३ ॥



एकस्य सर्वबीजस्य  
यस्य चेयमनेकधा ।  
भोक्तृभोक्तव्यरूपेण  
भोगरूपेण च स्थितिः  
॥ १.४ ॥



प्राप्त्युपायोऽनुकारश्च  
तस्य वेदो महर्षिभिः ।  
एकोऽप्यनेकवर्त्मैव  
समाम्नातः पृथक्पृथक् ॥  
१.५ ॥



# शब्द और अर्थ का सम्बन्ध



नित्याः शब्दार्थसम्बन्धाः  
समाम्नाता महर्षिभिः ।  
सूत्राणां शानुतन्त्राणां  
भाष्याणां च प्रणेतृभिः  
॥ १.२३ ॥



अपोद्धारपदार्था ये  
ये चार्थाः स्थितलक्षणाः।  
अन्वारुयेयाश्च ये शब्दाः  
ये चापि प्रतिपादकाः

॥ १.२४ ॥



कार्यकारणभावेन  
योग्यभावेन च स्थिताः ।  
धर्मे ये प्रत्यये चाङ्गं  
सम्बन्धाः साधवसाधुषु

॥ १.२५ ॥

ते लिङ्गैश्च स्वशब्दैश्च  
शास्त्रेऽस्मिन्नुपवर्णिताः  
स्मृत्यर्थमनुगम्यन्ते  
केचिदेव यथागमम्  
॥ १.२७ ॥



---

नित्यत्वे कृतकत्वे वा  
तेषामादिर्न विद्यते ।  
प्राणिनामिव सा चैषा  
व्यवस्था नित्यतोच्यते  
॥ १.२८ ॥



# शब्दब्रह्म की शक्तियाँ

ग्राह्यत्वं ग्राहकत्वं च  
द्वे शक्ती तेजसो यथा  
तथैव सर्वशब्दाना-  
मेते पृथगवस्थिते  
॥ १.५५ ॥

विषयत्वमनापन्नैः  
शब्दैर्नार्थः प्रकाशयते ।  
न सत्तयैव तेऽर्थाना-  
मगृहीताः प्रकाशकाः ॥  
१.५६॥



अतोऽनिर्ज्ञातरूपत्वात्  
किमाहेत्यभिधीयते ।  
नेन्द्रियाणां प्रकाशयेऽर्थे  
स्वरूपं गृह्यते यथा ॥  
१.५७ ॥



भेदेनावगृहीतौ द्वौ  
शब्दधर्मावपोद्भूतौ ।  
भेदकार्येषु हेतुत्व-  
मविरोधेन गच्छतः ॥

१.५८ ॥



वृद्ध्यद्वाद्यो यथा शब्दाः  
स्वरूपोपनिबन्धनाः ।  
आदैत्प्रत्यायितैः शब्दैः  
स्वरूपं यान्ति संज्ञाभिः ॥

१.५९ ॥

अग्निशब्दस्तथैवाय-  
मग्निशब्दनिबन्धनः ।  
अग्निश्रुत्यैति सम्बन्ध-  
मग्निशब्दाभिधेयया  
॥ १.६० ॥



यो य उच्चार्यते शब्दः  
नियत न स कार्यभाक् ।  
अन्यप्रत्यायने शक्ति-  
र्न तस्य प्रतिबध्यते ॥  
१.५६॥

# ध्वनि के प्रकार (वक्यपदीयम्)



स्फोटस्याभिन्नकालस्य  
ध्वनिकालानुपातिनः ।  
ग्रहणोपाधिभेदेन  
वृत्तिभेदं प्रचक्षते  
॥ १.७५ ॥

स्वभावभेदाग्निनित्यत्वे  
ह्रस्वदीर्घप्लुतादिषु ।  
प्राकृतस्य ध्वनेः कालः  
शब्दस्येत्युपचर्यते ॥  
॥ १.७६॥

शब्दस्योर्ध्वमभिव्यक्ते-  
वृत्तिभेदं तु वैकृताः ।  
ध्वनयः समुपोहन्ते  
स्फोटात्मा तैर्न भिद्यते ॥

१.७७ ॥





इन्द्रियस्यैव संस्कारः  
शब्दस्यैवोभवस्य वा ।  
क्रियते ध्वनिभिर्वादा-  
स्त्रयोऽभिव्यक्तिवादिनाम्  
॥ १.७८ ॥



---

इन्द्रियस्यैव संस्कारः  
समाधानाञ्जनादिभिः ।  
विषयस्य तु संस्कारः  
तद्गन्धप्रतिपत्तये  
॥ १.७९ ॥



चक्षुषः प्राप्यकारित्वे  
तेजसा तु द्वयोरपि ।  
विषयेन्द्रिययोरिष्टा  
संस्कारः स क्रमो ध्वनेः  
॥ १.८० ॥



स्फोटरूपाविभागेन  
ध्वनेर्ग्रहणमिष्यते ।  
कैश्चित्ध्वनिरसंवेद्यः  
स्वतन्त्रोऽन्यैः प्रकल्पितः  
॥ १.५६ ॥

## रामायण - आख्यान →

### बालकाण्ड →

- कौञ्चवधआख्यानम्
- ऋष्यशृङ्गाख्यानकम्
- ताटकाख्यानकम्
- कार्तिकेयाख्यानकम्
- गङ्गावतउणाख्यानम्
- मरुत्तानामुत्पत्त्याख्यानम्
- महिल्योद्धाडाख्यानकम्
- शूनश्शीपाख्यानकम्

### उत्तरकाण्ड →

- पुलस्त्याख्यानकम्
- राक्षसवंशीलपत्त्याख्यानम्

## महाभारत - पाठव्यान →

आदिपर्व →

- 1- कद्रुविनतीपाठव्यानम्
- 2- शकुन्तलीपाठव्यानम्
- 3- ययात्थुपाठव्यानम्

सभापर्व →

शिशुपालीपाठव्यानम्

वनपर्व →

1. मत्स्यीपाठव्यानम्
2. तलीपाठव्यानम्
3. शिल्पुपाठव्यानम्
4. रामीपाठव्यानम्
5. सावित्र्युपाठव्यानम्

उद्योगपर्व →

अम्बीपाठव्यानम्



[पुराण] → 10

“मद्वयं भद्वयं त्रैव ब्रह्मयं वचस्तुष्टयम् ।

अनापलिङ्गाकूस्कानि पुराणानि पुथक्पुथक् ॥”

मद्वयम् - 1. मत्स्य पुराण , 2. मार्कण्डेय पुराण

भद्वयम् - 3. भागवत पुराण 4. भविष्य पुराण

ब्रह्मयम् - 5. ब्रह्म पुराण . 6. ब्रह्मवैवर्त , 7. ब्रह्माण्ड

वचस्तुष्टयम् - 8. विष्णु 9. वायु 10. वाताह 11. वामन

अ - 12. अग्नि पुराण , ना - 13. नाडद पुराण

प - 14. पद्म पुराण , लिं - 15. लिङ्ग पुराण

ग - 16. गरुड पुराण कू - 17. कूर्म पुराण

सु 18. स्कन्द पुराण

## पुराण

1→ व्युत्पत्ति →  
वायु पुराण →

'पुरा पश्यतां वक्ति पुराणं तेन वै स्मृतम्।'

2→ पद्म पुराण →

'पुरार्थेषु मानयतीति पुराणम्'।

3→ ब्रह्माण्ड पुराण →

'पुरा इतदभूदिति पुराणम्'।

4→ मत्स्य पुराण →

'पुरातनस्य कल्पस्य पुराणानि विदुर्बुधाः।'

5→ महाभारत →

'पुराण भाष्यानं पुराणम्'।

(i)→ सायण →

'पुराणं पुरातनवृत्तान्तकथनरूपमाख्यातम्'।

(ii)→ यास्क → 'पुरा नवं भवति'।

(iii)→ पाणिनि → 'पुराभवमिति पुराणम्'।

(iv)→ मधुसूदनसरस्वती → 'विश्वस्पष्टेतिहासः पुराणम्'।

(v)→ राजशेखर → 'वेदाख्यानीपनिबन्धप्रायं पुराणम्'।

पुराण लक्षण → 5

1. सर्ग

2. प्रतिर्ग

3. वंश

4. मन्वन्तर

5. वंशानुयुक्ति

(1.) ब्रह्मपुराण → इसमें सृष्टि मनु की उत्पत्ति, उनके वंश का वर्णन, देवों और प्राणियों की उत्पत्ति का वर्णन।  
स्क पंडितशिवट → सौंड उपपुराण, जिसमें उड़ीसा के 'कोणार्क' मन्दिर का वर्णन है।

(2.) पद्मपुराण → 5 खण्ड

- (1.) सृष्टि खण्ड → 5 पर्व
- (2.) भूमि खण्ड
- (3.) स्वर्गखण्ड
- (4.) पाताल खण्ड
- (5.) उत्तर खण्ड

(3.) विष्णु पुराण → पुराण के 5 लक्षण बटित होते हैं।

(4.) वायु पुराण → शिव का वर्णन। → "शिवपुराण"।

इसमें 'गया-माहात्म्य' है।

चार भाग →

- 1. प्रक्रिया पाद
- 2. उपोद्घात
- 3. अनुबद्ध पाद
- 4. उपसंहार पाद

→ इसमें सृष्टिकर्म, भूगोल, खगोल, युगी, ऋषियों तथा तीर्थों का वर्णन एवं राजवंशों, ऋषिवंशों, वेद की शाखाओं, संगीतशास्त्र तथा शिवभक्तिका विस्तृत वर्णन।

5) भागवतपुराण →

इसमें सभी दर्बानों का सादर 'त्रिगमकल्पतरो' नर्गतितम् और विद्वानों का पडीछारथल 'विद्यावतां' भागवते पडीछा माना जाता है।

स्कन्ध → 12, अध्याय → 835, श्लोक → 18,000

'देवीभागवतपुराण' भी कहते हैं।

(6) नारद (बृहन्नाइदीय) पुराण →

इसमें वैष्णवों के उत्सवों और व्रतों का वर्णन।

खण्ड → 2

(1) पूर्वखण्ड - 125 अध्याय

(2) उत्तरखण्ड - 82 अध्याय

(7) मार्कण्डेय पुराण → 'दुर्गा-माहात्म्य'

(8) अग्निपुराण → इसमें विष्णु के अवतारों का वर्णन।

इसके अतिरिक्त - शिवलिंग, दुर्गा, गणेश, सूर्य, प्राणप्रतिष्ठा आदि के अतिरिक्त भूगोल, गणित, फलित-ज्योतिष, विवाह, मृत्यु, ऋतुन विद्या, वास्तुविद्या, दिनचर्या, नीतिशास्त्र, युद्धविद्या, धर्मशास्त्र, आयुर्वेद, छन्द, काव्य, व्याकरण आदि विषयों का वर्णन।

(9) भविष्य पुराण → 5 पर्व → आदिपराशरभूक्तीत्र वर्णन।

(1) ब्राह्मपर्व

(2) विष्णु पर्व

(3) शिव पर्व

(4) सूर्य पर्व

(5) प्रतिसर्ग पर्व

→ नागपंचमी की कथा

→ सूर्यपूजा का वर्णन।



(10) ब्रह्मवैवर्त पुराण → 'वैष्णव पुराण'

खण्ड → 4

1) ब्रह्म

2) प्रकृति

3) गणेश

4) श्रीकृष्ण-जन्म

(11) लिङ्ग पुराण → शिव पुराण

→ शिव के 28 अवतारों की कथाएँ।

(12) वडाह पुराण → गणेश-स्तोत्र, 'मथुरा-माहात्म्य', 'द्वारगीघृत'  
विष्णु के वडाह-अवतार का वर्णन।  
→ नाचिकेता की कथा। गणेश की कथा।

(13) स्कन्द पुराण → शिव के पुत्र स्कन्द (कार्तिकेय, सुब्रह्मण्य)  
के नाम पर यह पुराण है।

कुल श्लोक → 81,000

संहिताएँ → 6

सततकुमार, सूत, शंकर, वैष्णव, ब्राह्म, सौर।

सूतसंहिता पर 'माधवाचार्य' ने → 'तात्पर्य-दीपिका' नामक टीका।

गीता → 2

1. ब्रह्मगीता

2. सूतगीता

खण्ड → 7

1) माध्वखण्ड

2) वैष्णव

3) ब्रह्म

4) काशी

5) अवन्ती (रेवा)

6) तागड़ (ताप्ती)

7) प्रभास-खण्ड

→ काशीखण्ड में 'गंगासहस्रनाम'  
स्तोत्र भी है।



(14) वामन-अवतार →

विष्णु के वामन-अवतार का वर्णन।

→ शिव महात्म्य, शैव-तीर्थ, उमा-शिव विवाह,  
गणेश-उत्पत्ति, कार्तिकेय चरित आदि का वर्णन।

(15) कूर्मपुराण → इसमें विष्णु के कूर्म अवतार का वर्णन।

संहिता → 4

1.) ब्राह्मी

2.) भागवती

3.) सौंडी

4.) वैष्णवी

→ 'ईश्वरगीता' और 'क्यास गीता' भी हैं।

(16) मत्स्य पुराण → 'जलप्रलय का वर्णन'।

→ 'प्रयाग-महात्म्य' का वर्णन।

(17) गरुडा पुराण → वैष्णव पुराण।

प्रवक्ता → विष्णु, श्रीता → गरुडा

→ विष्णुपूजा का वर्णन।

श्लोक → 18,000

(18) ब्रह्माण्ड-पुराण →

पाद → 4

1. प्रक्रिया

2. अनुषङ्ग

3. उपोद्घात

4. उपसंहार

## पौराणिक - आडम्बर →

1. ब्रह्म पुराण →

1. पार्वती उपाख्यान
2. श्रीकृष्ण - चरित

2. पद्म पुराण →

- (1) समुद्र मंथन. (2) वृत्रासुरसंग्राम
- (3) वामनावतार. (4) मार्कण्डेय एवं कार्तिकेय उत्पत्ति.
- (5) रामचरित (6) ताडकासुरवध, (7) विष्णु चरित
- (8) रुक्म विवाह, (9) सोमशर्मा की कथा.
- (10) सकुला की कथा, (11) च्यवन - आडम्बर.
- (12) शकुन्तलीपाख्यान. (13) इर्वशी-पुच्छवा उपाख्यान.
- (14) रामायण - कथा. (15) शृंगी आषि की कथा.
- (16) उत्तर रामचरित की कथा. (17) भागवत महिमाख्यान
- (18) ब्रह्म कथा (19) कृष्ण कथा

→ मौर्य वंश का वर्णन → विष्णु पुराण में

→ खान्धर्व वंश का वर्णन → मत्स्य पुराण

→ चन्द्रगुप्त प्रथम का वर्णन → वायु पुराण

पुराणों का विभाजन → 3 प्रकार

[1.] वैष्णव पुराण (सात्विक) →

विष्णु, नाउद, भागवत, गरुड, पद्म, वराह  
(सूत्र → विना भागवत)

[2.] शैव पुराण (तामस) →

मलय, कूर्म, लिङ्ग, शिव (वायु), अग्नि, स्कन्द  
(सूत्र → कूर्म अशिलि)

[3.] ब्रह्म पुराण (राजस) →

ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त, मार्कण्डेय, ब्रह्म, वामन, भविष्य

श्रीमद्भगवद्गीता → 18 अध्याय

- प्रथम अध्याय → अर्जुन-विषादयोग  
द्वितीय अध्याय → सांख्ययोग  
तृतीय अध्याय → कर्मयोग  
चतुर्थ अध्याय → ज्ञानकर्मसंन्यासयोग  
पञ्चम अध्याय → कर्मसंन्यासयोग  
षष्ठम अध्याय → आत्मसंयमयोग  
सप्तम अध्याय → ज्ञानविज्ञानयोग  
अष्टम अध्याय → अष्टावस्थयोग  
नवम अध्याय → राजविद्या-राजगुह्ययोग  
दशम अध्याय → विभूतियोग  
एकादश अध्याय → विश्वरूपदर्शनयोग  
द्वादश अध्याय → भक्तियोग  
त्रयोदश अध्याय → क्षेत्रज्ञेयविभागयोग  
चतुर्दश अध्याय → गुणत्रयविभागयोग  
पञ्चदश अध्याय → पुरुषोत्तमयोग  
षोडश अध्याय → देवासुरसम्पदविभागयोग  
सप्तदश अध्याय → शत्रुत्रयविभागयोग  
अष्टादश अध्याय → मोक्षसंन्यासयोग

Twinkl →

[ असांख्यकर्मज्ञकर्मसैन्य, आत्मज्ञानाप्तं राजम् ।  
विभूविश्वभक्तिज्ञेन गुणपुरुषदेव शत्रुमहम् ॥ ]



गीता में कुल श्लोक → 700

कृष्ण का श्रौतव → पाञ्चजन्य

युधिष्ठिर का श्रौतव → मत्त विजय

भीम का श्रौतव → पौण्ड्र

अर्जुन का श्रौतव → ~~पौण्ड्र~~ देवदत्त

नकुल का श्रौतव → सुधीव

सहदेव का श्रौतव → मणिपुष्पक



प्रमुख स्मृतियों का सामान्य परिचय →

[1] मनुस्मृति →

अध्याय → 12

श्लोक → 2694

[2] याज्ञवल्क्यस्मृति →

अध्याय → 3

1. आचार्यशास्त्र → 13 प्रकरण

2. व्यवहारशास्त्र → 25 प्रकरण

3. प्रायश्चित्तशास्त्र → 6 प्रकरण

Total → 44 प्रकरण

याज्ञवल्क्य की 3 अन्य स्मृतियाँ →

1. बृहदयज्ञवल्क्य

2. योगयाज्ञवल्क्य

3. बृहदयज्ञवल्क्य

[3] पराशरस्मृति →

अध्याय → 12

काण्ड → 3

1. आचार्यकाण्ड

2. व्यवहारकाण्ड

3. प्रायश्चित्तकाण्ड

श्लोक → 500

टीका → माधवाचार्य → पराशरमाधवीटीका

[4] नाउदस्मृति →

प्रकरण → 10

श्लोक → 1028

[5] काल्याणस्मृति →

प्रपाठ → 3

खण्ड → 29

श्लोक → 500

[6] विष्णु स्मृति → अध्याय → 8

विष्णुस्मृति के टीकाकांड → नन्दपण्डित → वीजयल्लि टीका

[7] बृहस्पति स्मृति → श्लोक → 711

[8] द्वारीत स्मृति → दो भाग →

1. लघुद्वारीत स्मृति - 4 अध्याय

2. बृहद्वारीत स्मृति - 8 अध्याय

[9] गौतम स्मृति → अध्याय → 29

[10] अङ्गिरा स्मृति → श्लोक → 72

जीवानन्द संग्रह में प्रकाशित आंगिरस स्मृति →

श्लोक → 1297

भाग → 2

1. पूर्वाङ्गिरस → 1113 श्लोक

2. उत्तराङ्गिरस → 164 श्लोक,  
12 अध्याय

[11] सर्वत स्मृति → श्लोक → 227

[12] दक्ष स्मृति → अध्याय → 7  
श्लोक → 208

[13] यम स्मृति → 3

1. यमस्मृति → 78 श्लोक
2. लघुयमस्मृति → 99 श्लोक
3. बृहद्यमस्मृति → 182 श्लोक

[14] आपस्तम्बस्मृति → अध्याय → 10

[15] शातातपस्मृति → अध्याय → 6  
श्लोक → 218

[16] व्यासस्मृति → अध्याय → 4

[17] बृहस्पति स्मृति → अध्याय → 7  
श्लोक → 1139

## [ अर्थशास्त्र ]

→ अर्थशास्त्र, कौटिल्य या चाणक्य (चौथी शती ई.पू.)  
द्वारा रचित ग्रन्थ है।

अधिकरण → 15

विषय / प्रकरण → 180

अध्याय → 150

श्लोक → 6000

[ विनयाध्यक्षधर्मस्थं कण्टकं योगमण्डलं ।

षाड्गुण्यं व्यसनं चैव अभियारूपलकर्म स्वं च ॥

साङ्ग्राहिक सङ्घवृत्तम् आवलं दुर्गलिम्भनम् ।

तथौपनिषदं तन्त्रयुक्तिः कौटिल्यसंग्रहे ॥ ]

1. विनयाधिकाङ्किक

2. अध्यक्षप्रचारम्

3. धर्मस्थीय

4. कण्टकशोधनम्

5. योगवृत्त

6. मण्डलयौनि

7. षाड्गुण्यं (सन्धि कर्म)

8. व्यसनाधिकाङ्किक

9. अभियारूपलकर्म

10. साङ्ग्राहिक

11. सङ्घवृत्त

12. आवलीयसम्

13. दुर्गलिम्भोपाय

14. औपनिषद

15. तन्त्रयुक्तिः

विनयाधिकारिकम् → [ 18 प्रकरण ]

- |   |                     |
|---|---------------------|
| 1. विद्यासमुद्देशः                        | 11. मन्त्राधिकारः   |
| 2. बृहत्संयोग                             | 12. दूतप्रणिधिः     |
| 3. इन्द्रियजयः                            | 13. राजपुत्रसंहरणम् |
| 4. अमात्योत्पत्तिः / राजर्षिवृत्तम्       | 14. अवरजद्वन्तम्    |
| 5. मन्त्रीपुत्रोद्दितीत्पत्तिः            | 15. अवरजद्वे चकृतिः |
| 6. उपधाभिक्षाचार्योयज्ञानमयमात्याः - नाम् | 16. राजप्रणिधिः     |
| 7. गूढपुत्रोत्पत्तिः                      | 17. निशातप्रणिधिः   |
| 8. गूढपुत्रजवप्रणिधि                      | 18. आत्मरहितकम्     |
| 9. स्वविषयेकृत्याकृत्यपक्षरक्षणम्         |                     |
| 10. परविषये कृत्याकृत्यपक्षीपग्रह         |                     |



[Unit - 10]

अर्थशास्त्र

नमः शुक्रवृक्षस्यतिभ्याम्

प्रकरण - 1 [विद्यासमुद्देशः]

अध्याय - 1 [आन्वीक्षिकी-स्थापना]

कौटिल्य - 4 विद्या

[आन्वीक्षिकी, त्रयी, वार्ता, दण्डनीति]

मनु - 3 विद्या

[त्रयी, वार्ता, दण्डनीति]

→ 'त्रयीविशीर्षी आन्वीक्षिकीति'

बार्हस्पत्याः - 2 विद्या

[वार्ता, दण्डनीति]

→ संवत्सरायमात्रं हि त्रयी लोक-यात्राविद इति ।

अपौरुषेयः (शुक्राचार्य) - 1 विद्या [दण्डनीति]

→ तस्यां हि सर्वविद्यारम्भाः प्रतिबद्धाः इति ।

आन्वीक्षिकी → 'सांख्यं योगी लोकायतं चैत्यान्वीक्षिकी' ।

त्रयी → 'धर्माधर्मौ त्रय्याम्' ।

वार्ता → 'अर्थनिर्णयौ वार्ताय्याम्' ।

दण्डनीति → 'न्यायपनयो दण्डनीत्याम्' ।

आन्वीक्षिकी → 'बलाबलैर्धैर्यासां हेतुभिरन्वीक्षमाणान्वीक्षिकी  
लोकस्योपकरोति; व्यसनेऽभ्युदये च बुद्धिमवस्थाप-  
यति; प्रलावाक्यक्रियावैशाख्यं च करोति ।'

आत्रीक्षकी → "प्रदीपः सर्वविद्यानामुपायः सर्वकर्मणाम् ।  
 आश्रयः सर्वधर्माणां शब्दोऽन्वीक्षकी मता ॥"

### अध्याय → १ [ त्रयी-विद्या ]

- 1 → सामग्यपूर्वेदास्तयस्त्रयी । अथर्ववेदेतिहासवेदों - च वेदाः ।  
 शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं हल्दो विधितिर्ज्योतिषमिति  
 - आङ्गिरसि ।
2. एष त्रयीयस्त्रयतुर्गा वर्णानामाश्रमाणां च स्वधर्मस्थापना-  
 - दौपकारिकः ।

### चारों वर्णों के धर्म →

- 1) ब्राह्मण → 'अध्ययनम् अध्यापनं यजनं दानं प्रतिग्रहः येति ।
2. क्षत्रिय → 'अध्ययनं यजनं दानं शस्त्राजीवी भूतउक्षणं च' ।
3. वैश्य → 'अध्ययनं यजनं दानं कृषिपशुपाल्ये वाणिज्या च ।
4. शूद्र → 'द्विज्यातिशुश्रूषा वार्ता काउकुशीलवकर्म च ।

### चारों आश्रमों के धर्म →

1. गृहस्थ → 'स्वकर्माप्तिवस्तुल्यैः समानविभिर्वैवाह्यमृतुगामित्वं  
 देवपित्रितिथिमृत्यैषु त्यागः शेष भोजनं च' ।
2. ब्रह्मचारी → 'स्वाध्यायौडिनिकायामिषेको भैक्षव्रतत्वमाचार्ये  
 प्राणान्तिकी वृत्तिस्तदभावे मुञ्चपुत्रे स ब्रह्मचारीणिग ।
3. वानप्रस्थ → 'ब्रह्मचर्यं भूमौ शय्या जटाजिह्वाउणमग्निदीवा-  
 - मिषेको देवतापित्रितिथिपूजा वन्यश्याहारः ।
4. परिव्रजक → 'संयतन्द्रियत्वमनारम्भी निक्किञ्चनत्वं  
 सङ्गत्यागा भैक्षमनैकश्रावणार्से ब्राह्मण्यन्तरं  
 - च शौचम् ।

प्रत्येक वर्ण द्वयं प्रत्येक आश्रम-धर्म →

'सर्वेषामहिंसा सत्यं शौचमनन्युयादऽद्वैतस्य समा च ।'

→ स्वधर्मः स्वगणितान्त्याय च । तस्यातिक्रमे लोकः सङ्ग्रादुच्छिद्येत ।

### अध्याय-3 [वार्तादण्डनीति स्थापना]

वार्ता → कुषिण्णुपाल्यै वार्ताया च वार्ता ।  
आन्यपशु द्विदण्डकृष्यविशिष्टप्रकानादौ पकाडिकी ।  
तथा स्वपक्षं परपक्षं च वशीकरोति कीडादण्डाभ्याम् ।

दण्डनीतिः → आन्वीक्षिकी त्रयी वर्तमाना यंगक्षेमसाधनी दण्डः ।  
तस्य नीतिः दण्डनीतिः । अलब्धलाभायः, लब्धपरिहर्षणीः,  
रक्षितविवर्धनीः, बृद्धस्य तीर्थेषु प्रतिपादनी च ।

→ तीक्ष्णदण्डो हि शूलानामुद्वेजनीयः ।

→ मृदुदण्डः पडिभूयते ।

→ यथार्द्धदण्डः पूज्यः ।

### अध्याय-4 [बुद्धसंयोग]

(शिक्षा) विनयः → दो प्रकार

1. कृतक

2. स्वाभाविक

शिक्षा → वृत्तचैलकर्म निपि संख्यातं चोपयुज्जीत ।  
वृत्तौपयनस्त्रयीमान्वीक्षकी च शिष्टेष्ट्यः,  
वार्तामिदृशैष्ट्यः, दण्डनीतिं वक्तृप्रयैकदृश्यः ।

→ ब्रह्मचर्यं चाष्टादशावृत्ति । अतो गौडानं वाडकर्म च ।  
अस्य विनयस्य विद्याबुद्धसंयोगे विनयबुद्धयर्थं  
तन्मूलत्वाद्धितस्य ।



## राजा प्रह्व वर्णन →

प्रथम प्रह्व में → दायी, बायाँ-बायें आदि शिक्षा ग्रहण

दूसरे प्रह्व में → इतिहास प्रवण ।

(पुराण, इतिहास, आख्यायिका, उदाहरण (मीमांसा),  
धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र)

श्रीष → ~~विष~~ (शौचमहीरात्रभागमपूर्वग्रहणं गृहीतपट्टिचयं  
च कुर्यात् । अगृहीतानामाभीक्ष्ण्यश्रवणं च ।)

→ शुताद्धि प्रजोपजायते; प्रजाया यौगे यौगादात्मवसैति  
विद्याग्यामर्शम् ।

“ विद्याविनीतो राजा हि प्रजानां वितये रतः ।

अनयां पृथिवीं भुङ्क्ते सर्वभूतहिते रतः ॥ ”

## प्रकरण-3 [अध्याय-5]

### इन्द्रिय-जयः

→ विद्या वितयेतु इन्द्रियजयः, कामक्रीडालीभमानमदहर्ष-  
-त्यागात्कार्यः ।

→ शास्त्रार्थानुष्ठानं इन्द्रियजयः ।

→ काम से विनष्ट राजा → दाण्डक्य, कडाल ।

कौप से विनष्ट राजा → जन्मजय, तालजय ।

लीभ से विनष्ट राजा → पुच्छरा, अजविन्दु

मान से विनष्ट राजा → रावण, दुर्योधन

मद से विनष्ट राजा → उम्भौष्ठ, हृदयराज, उर्जुन ।

दर्व से विनष्ट राजा → वातापि, वृष्णि ।

→ [जामदग्न्य (पड्डुडाम), अम्बडीष और नाभाग (नभाग  
का पुत्र) जैसे चित्तेन्द्रिय राजाओं ने चिदकाल तक  
इस पृथिवी का निष्कण्टक राज्य भोगा ]

## प्रकरण-3 [अध्याय-6]

### राजर्षिवृत्तम्

→ अर्थस्व प्रधान इति कौटिल्यः, अर्थमूर्त्ति हि धर्मकामाविति।

“सहायसाध्यं राजत्वं अकर्मकं न वर्तते।

कुर्वीत सयिवास्तस्मान्नेष्टां च शृणुयान्मतम्॥”

## प्रकरण-3 [अध्याय -4]

### अमात्यनियुक्तिः

आचार्यो केमत →

1. भारद्वाज → सहाय्यायिनोऽमात्यान् कुर्वीत, दृष्टार्थं च -  
सामर्थ्यत्वादिति भारद्वाजः।  
(ते ह्यस्य विश्वास्य भवन्तीति॥)
2. विशालाह → ये ह्यस्य गुह्यसधर्माणस्तानमात्यान् कुर्वीत,  
समानशीलव्यसनत्वात्।
3. पराशर → ‘य स्तमापत्यु प्राणाबाधयुक्तास्त्वनुगृहीयुस्तान-  
मात्यान् कुर्वीत, दृष्टानुशागत्वादिति।’
4. पिशुन (राउद) → ‘संश्रव्यार्थेषु कर्मरु नियुक्ता ये  
यथादिल्लभ्यं सविश्वं वा कुर्यस्तानमात्यान्कुर्वीत,  
दृष्टगुणत्वादिति।’
5. कौणपदन्त → पितृपैतामहानमात्यान् कुर्वीत, दृष्टापदानत्वात्।
6. वात्स्यायि → नीतिविदो त्वानमात्यान् कुर्वीत।



३. बाहुदलीपुत्र →

अभिजन्मप्रज्ञाशौचशौच विरागा युक्ता नमात्यान्  
कुर्वीत, गुणप्राधान्यादिति ।

४. कौटिल्य →

सर्वभूपपन्नमिति कौटिल्यः । कार्यसामर्थ्याद्वि  
पुङ्गवसामर्थ्यं कल्प्यते सामर्थ्यतश्च ।

\* विमज्ज्यामात्यविभवं देवाकालौ च कर्म च ।

अमात्याः सर्वं स्वीते कार्याः स्युर्न तु मन्त्रिणः ॥

प्रकरण ४ [अध्याय ४]

मन्त्रिः पुटीहितयो निर्युक्तिः

राजवृत्ति ३

१. प्रत्यक्ष
२. पट्टीक्ष
३. अनुमैय

स्वयं दृष्टं प्रत्यक्षं, पट्टीपदिष्टं पट्टीक्षं, कर्मसु कृतेनाकृतविषय-  
-मनुमैयम् ।

प्रकरण ५ [अध्याय-५]

उपधाभिः शौचशौचप्रज्ञानमात्यान्म

५. अमात्यपट्टीक्षा विधि → ४ प्रकार

(१) धर्मोपधा → (पुटीहित द्वाडा) [प्रत्याडव्याने शुचिः ।]

(२) अर्थोपधा → (सैन्यपति द्वाडा अमात्यो मे धनं सै फूट कडने गले ।  
कड वसूलने बाले (रगनिश्चयता की वाध्यक्ष)

(३) कामोपधा → (स्वयं सिनी वेशाद्यादी गुप्तचादी, बाह्य विहाड,  
अन्तर्दिक विहाड)

(४) भयोपधा → (गजा के समीपवर्ती कपटवेशाद्यादी बात्र  
गुप्तचर)

→

प्रकरण ७ [अध्याय - १०]

गूढपुरुषोत्पत्तिः

गुप्तचरों की नियुक्ति → २ प्रकार

(१) संस्था

(२) संचार

संस्थागुप्तचर → ५

१. कापटिक → 'परमर्जितः प्रगल्भश्चात्रः कापटिकः'।
२. उदास्थित → 'प्रव्रज्याप्रत्यवसितः प्रज्ञाशौचयुक्त उदास्थितः'।
३. गृहपतिक → कर्षको वृत्तिहीणः प्रज्ञाशौचयुक्ती गृहपतिकल्प्यन्तः।
४. वैदेहक → 'वाणिज्यको वृत्तिहीणः प्रज्ञाशौचयुक्ती वैदेहकल्प्यन्तः'।
५. तापस → मुण्डो जटिली वा वृत्तिकामस्तापसकल्प्यन्तः।

प्रकरण ८ [अध्याय ११]

गूढपुरुषप्रणिधि

संचारगुप्तचर →

- (१) सत्री → ये चास्य सम्बन्धितोऽवश्यमर्तव्यस्तै लक्षणमङ्ग-  
-विद्यां जम्भक-विद्यां मायागतमात्मधर्म  
निमित्तमन्तर्यकामित्यधीयमानाः सत्रिणः संसर्गविद्या वा।
- (२) तीक्ष्ण → ये ज्ञानपदे ब्रूयास्त्यक्तात्मानो हस्तिनं व्यालं  
वा वृत्त्येताः प्रतियोग्येयुक्ते तीक्ष्णाः।
- (३) रसद → ये बन्धुषु निःस्नेहाः क्रूराश्चालसाश्च ते रसदाः।

प्रकरण-9 [अध्याय-13]

पञ्चविधये कृत्याकृत्य पञ्चीपग्नहः

पात्र प्रकार के कृत्य →

- (1) क्रुद्धवर्गः संश्रुत्याग्निं विप्रलब्धः ।  
( धन देने की घोषणा करके जिससे नहीं दिया )
- (2) भीतवर्गः स्वयमुपहतौ विप्रकृतः ।  
( किसी की हिंसा करने वाला )
- (3) लुब्धवर्गः 'परिह्वणौऽत्यान्तस्वः' ।  
( जिसकी सम्पत्तियाँ क्षीण हो गई हों )
- (4) मानीवर्गः उपात्मसम्भ्रावितः ।  
( अपने को महान् समझने वाला )

## प्रकरण १० [अध्याय १४]

### मन्त्राधिकार →

भारद्वाज्य मत → तस्माद्गुह्यमेकी मन्त्रयेति भारद्वाज्यः ।  
→ तस्मान्नारस्य पदे - विदुः ।

विशालाह → नैकस्य मन्त्रसिद्धिरुक्तीति विशालाहः ।  
→ न कश्चिदवमन्येत सर्वस्य शृणुयान्मतम् ।

पाश्वर → सतन्मन्त्रज्ञानं नैतन्मन्त्ररक्षणो गतिपराशरः ।  
→ यदस्य कार्यमभिप्रेतं तत्प्रतिरूपकं मन्त्रिणः पूरहेत् ।

पिशुन → तस्मात् कर्मसु ये येष्वभिप्रेतास्तेः सह  
मन्त्रयेत् ।

कौटिल्य → मन्त्रिभिस्त्रिभिश्चतुर्भिर्वा सह मन्त्रयेत् ।

→ मन्त्र के वर्ग → ५

१. कर्मणारम्भोपाय
२. पुरुषप्रव्यसंपद
३. देशकालविभाग
४. विविपातः प्रतीक
५. कार्य सिद्धि

→ 'देशकालकार्यवशीन त्वेकेन सह द्वाभ्यामेकी वा  
यथासागर्य मन्त्रयेत् ।'



मन्त्री-परिषद् →

मनु के अनुसार → 12

बृहस्पति → 16

अश्विनी (शुक्राचार्य) → 20

कौटिल्य → 4

'यथायामर्थमिति कौटिल्यः'

→ 'नारयणं गुह्यं पठे विष्णुं विद्मं विद्यात् पशुस्य च ।

गूहेतु कर्म इवाङ्गानि यत्स्याद् विवृतमात्मनः ॥'

→ 'यथा ह्यश्वीप्रियः श्राद्धं न सतां श्रौतुमिति ।

स्वमश्रुतशास्त्रार्थी न मन्त्रं श्रौतुमिति ॥'



## राज्य के 7 अंग →

1. राजा
2. अमात्य
3. जनपद
4. दुर्ग
5. कौष
6. दण्ड
7. सैन्य

प्रकरण ११ [अध्याय १५]

दूत के प्रकार ३

- (1) निसृष्टार्थः - अमात्यसम्पदीपेती।
- (2) परिमितार्थः - पादगुणहीनः।
- (3) शासनद्वयः - अर्धगुणहीनः।

प्रकरण १२ [अध्याय १६]

राजपुत्ररक्षणम्

भारद्वाज → तैषामप्यतस्नेहे पितृर्युपांशादण्डः श्रेयानिति।

विशालाक्ष → तस्मादेकस्थानावदोषः श्रेयानिति।

पाराशर → तस्मादन्तपालदुर्गे वासः श्रेयानिति।

पिशून → तस्मात् स्वविषयादपकृष्टे समन्तदुर्गे वासः श्रेयानिति।

कौणपदन्त → तस्मान्तमातृव-धुषु वासः श्रेयानिति।

वातव्याधि → तस्माद् गताभ्यधर्मेऽवैगमवस्तुजैर्युः।

कौटिल्य → तस्मादुत्तमत्यां महिष्याम् आत्विजश्चक्रमै-प्र-  
- बार्हस्पत्यं निर्वपेयुः। अपानसत्त्व्यां कौमार-  
- श्रुत्यौ गर्भभर्मणि प्रजैन च विर्यतेत।

राजपुत्रश्रेणियां ३

१. बुद्धिमान् → शिष्यमाणीधर्माचरितुपलभते चानुतिष्ठति च बुद्धिमान्।
२. भाहार्यबुद्धि → उपलब्धमानी तानुतिष्ठत्याहार्यबुद्धिः।
३. दुर्बुद्धि → अपात्यनित्यौ धर्मार्थद्विणी येति दुर्बुद्धिः।

शिल्पीयधिकृत → उपद्वय प्रसार।

अनपद - निवेश, दुर्ग-विधान, आय-व्यय साधन, सूत्राद्वय -  
सीताद्वय - सुताद्वय आदि वर्णन।

दुर्ग चौखना → चार दुर्ग (कौटिल्यानुसार)

1. औदकदुर्ग → जल से पूर्ण। राज्य के चारों ओर तालाब का निर्माण
2. पार्वतदुर्ग → गिरि। पर्वत से निर्मित
3. धान्वादुर्ग → भूमि पर। पिछावटी भूमि बनाना।
4. वनदुर्ग → राज्य के चारों ओर गहरे वन हों।

[ इत्तम कोटि का दुर्ग → पार्वत दुर्ग ]

कौषध्वय → [8]

- |              |             |
|--------------|-------------|
| 1. प्रतिबन्ध | 5. पडिदायण  |
| 2. प्रयोग    | 6. उपभोग    |
| 3. व्यवहार   | 7. पडिभर्तन |
| 4. अवस्तार   | 8. अपहार    |

कर चौखना → [3 प्रकार के]

1. बाह्य कर → राज्य में उत्पन्न वस्तुओं पर।
2. आन्तर कर → राजमहल-राजधानी में उत्पन्न वस्तु।
3. सातिथ्य कर → विदेशी वस्तुओं पर।

सेना-प्रकार → सात प्रकार की सेना।

1. सौं सल सेना → राजधानी की सुरक्षा के लिए सेना।
2. भृत्य सेना → वेतन पर निर्धारित सेना।
3. श्रेणी सेना → युद्ध में उठा करने वाली सेना।
4. मित्र सेना → मित्र-राज्य की सेना।
5. समिक् सेना → शत्रु की परीक्षा हेतु सेना।
6. आणविक सेना → वन्यजीति के सैनिक।
7. सौं लसाहिक सेना → लुटेरे - छिंसक - दयाभाव रहित सेना।

→ तृतीयाधिकरण → [धर्मस्थायम्]

विवाद-विवाह-दायविभागधिकाड़ी-मजबूती के नियम-  
थरोहर आदि का वर्णन।

विवाह प्रकार → आठ प्रकार के विवाह।

1. ब्रह्म विवाह → वस्त्राभूषणादि देकर विधवा कन्यादान करना।
2. प्राप्तापत्य-विवाह → बेटी के बैठकर कन्या का कन्यादान करना।  
बहु-वधू धर्माचरण का व्रत लेकर विवाह करना।
3. गुप्त-विवाह → बरपह से गौ का जोड़ा लेकर विवाह करना।
4. दैव-विवाह → वेदी में बैठकर ऋत्विक् का कन्यादान करना।
5. गान्धर्व विवाह → स्वेच्छापूर्वक प्रेमबन्धन में बंधना।
6. आसुडी-विवाह → बरपह दास धन देकर कन्या का ग्रहण करना।
7. राक्षस-विवाह → बलपूर्वक कन्या का अपहरण करना।
8. पेंड्राय-विवाह → सोई कन्या का हरण करके विवाह करना।

वाक्पाठ्य प्रकार → [थाड प्रकार का]

निष्ठु → किसी की धिक्कारना।

अश्लील → अपमानजनक शब्द कहना।

हीकन्य → भीषण आड़ोप लगाना।

दण्डपाठ्य → मारना, पीटना आदि।



## दाय विभाग → [चार प्रकार का होता है]

1. विभाजन काल
2. विमर्षमान सम्पत्ति
3. विभाजन विधि
4. विभाजनरूप अधिकारी

## → चतुर्थ अधिकरण → [कण्टक शोधन]

विपत्ति पहुँचाने वाली सै प्रजा की रक्षा करना।

## कार्य श्रृंखला → दो प्रकार के कार्य हैं।

1. दुर्विष्ट (कठिन)
2. सुविष्ट (सुलभ)

## → पंचमाधिकरण → [योगवृत्त]

उत्पादिकारियों के दण्ड की व्यवस्था, भृत्यों का पौषण, राजपुत्र का अभिवेक, वैतन संबंधी कार्य इत्यादि का वर्णन।

## → छष्ठाधिकरण → [मण्डल योनि]

प्रकृतिगुण, शान्ति-उद्योग का वर्णन।

## राजा के गुण → चार गुण

1. अभिगामिक
2. उत्साहगुण
3. आत्म सम्पन्न
4. प्रज्ञागुण

## राज्य-प्रकृति → 7 प्रकृति (राजसम्पत्ति)

राजा, अमात्य, राष्ट्र, दुर्ग, क्रीडा, दण्ड, मित्र।

## अमात्य की पड़ी → चार प्रकार से।

धर्मोपधा, अर्थोपधा, कामोपधा, भयोपधा।

## → सप्तमाधिकरण → चाण्डगुप्य

### सन्धि प्रकार → 6: गुण।

1. सन्धि → शत्रुओं के आचार पर दो राजाओं का पड़स्पर मैल।
2. विग्रह → अपकारी विग्रहः। (शत्रु की नष्ट करना ही उचित)
3. आसन → उपक्षेपणमासनम्। (चुपचाप बैठ जाना जब तक युद्ध योग्य न हो।)
4. यान → अभ्युच्चयौयानम्। (युद्ध में फँसे राजा पर धावा बोलना।)
5. संश्रय → परापूर्ण संश्रय। (आत्मसमर्पण करना।)
6. द्वैधीभाव → सन्धि विग्रहोपादान द्वैधी भाव। (इन्तजि का यत्न करना।)

## व्यसन भेद → दो

1- मानुष व्यसन (5 प्रकार)

2- देव-व्यसन (अग्नि-जल-व्याधि-दर्शिए-महा)

## → नवमाधिकरण → अभियान्तरकर्म

शक्ति प्रकार → तीन। 1. उत्साह  
2. प्रभाव  
3. मन्त्र } → राज्यामें तीनों हीनी चाहिए।

## नीति का निर्माण → 4 प्रकार से।

1. साम 2. दान 3. दण्ड 4. भेद।

## → दशनाधिकरण → [साङ्गमिक]

### शुद्ध-यात्रा प्रक्रिया →

अथम-मध्यम-उत्तम चलना चाहिए।

4 कोश → 6 कोश - 6 कोश

### अन्तर्भेदी रचना → चर्हि हाथी → बीच में छोड़े → अगले रथ।

हावनी → 500 धनुष दूरी

पैदल सैनिक → 14 धनुष दूरी

हाथी-रथ → 70 धनुष दूरी

राजा → 200 धनुष दूरी

→ सकादशाधिकरण → संघबृत्त। (विद्यादि हाडा शत्रु की माहना)

→ द्वादशाधिकरण → आबलीयस। (शत्रु सेनापतियों के वध का ढंग)

→ त्रयोदशाधिकरण → दुर्गलिम्भीपाय। (दुर्गों को प्राप्त करने के उपाय)

→ चतुर्दशाधिकरण → औपनिषदिक। (शत्रु विनाश के लिए औपनिषदों का प्रयोग)

→ पंचादशाधिकरण → तन्त्र-युक्ति। (अर्थशास्त्रीय शब्दों की परिभाषा)



# 1. — अशोकस्य अभिलेखाः —

शिलालेख	स्थान	भाषा	लिपि	विषय (विशेष)
09 प्रथमः	गिरनार	प्राकृत (पालि)	ब्राह्मी	राज्यविस्तार, जनकल्याण
10 द्वितीयः	-॥-	-॥-	-॥-	अहिंसा (धम्मलिपि)
तृतीयः	-॥-	-॥-	-॥-	धर्मप्रचार, अहिंसा, जनकल्याण, दानं, समाजसेवा, मित्रवत्ता ।
11 चतुर्थः	-॥-	-॥-	-॥-	धर्मप्रदेश, अहिंसा, जनकल्याण ।
12 पंचमः	मानसेरा (पाकिस्तान)	-॥-	* खरोष्ठी	धर्मप्रदेश, अहिंसा, जनकल्याण ।
13				
14 षष्ठः	गिरनार	-॥-	ब्राह्मी	राज्य के प्रति अशोक के राज्यकर्तृत्व ।
15 सप्तमः	शाखावगी (पाक.)	-॥-	* खरोष्ठी	सामाजिक धार्मिक समरसता ।
6 अष्टमः	-॥-	-॥-	-॥-	धर्मनिष्ठसामाजिकता ।
7 नवमः	गिरनार	-॥-	ब्राह्मी	धर्मभंगस, धर्मदान, धर्मानुग्रह ।
दशमः	-॥-	-॥-	-॥-	धर्माचरण ।
8 एकदशः	शाखावगी	-॥-	* खरोष्ठी	धर्मदान और उसकी व्याख्या ।
9 द्वादशः	गिरनार	-॥-	ब्राह्मी	धार्मिक समरसता ।
10 त्रयोदशः	शाखावगी	-॥-	* खरोष्ठी	* कलिङ्गयुद्धपरिणाम, मानवता ।
चतुर्दशः	गिरनार	-॥-	ब्राह्मी	धर्मलिपि-लेखनप्रयोजन

## 2. — अशोकस्थ स्तम्भलेखा: —

लेख	स्थान	भाषा	लिपि	विषय (विशेष)
1	दिल्ली	प्राकृत	ब्राह्मी	धर्मशिक्षा और उसकी माहिरा - ।
2.	-॥-	-॥-	-॥-	धर्मतत्व विवेचना - ।
3.	-॥-	-॥-	-॥-	सम्यक् दृष्टि और आत्मविकास - ।
4.	-॥-	-॥-	-॥-	उच्चाधिकारी और कर्मचारी - कर्तव्य - ।
5.	-॥-	-॥-	-॥-	अहिंसा और जीवरक्षा - ।
6.	-॥-	-॥-	-॥-	लोकहित - ।
7.	-॥-	-॥-	-॥-	धर्मवृद्धि, धर्माचरण, लोककल्याण - ।
8.	गुजरा (दक्षिण)	-॥-	-॥-	धर्मोपदेश - ।
9.	मरकी (कर्नाटक)	-॥-	-॥-	-॥- / 'अशोक' नामी लेख - ।
10.	रुमिनेई (नेपाल)	-॥-	-॥-	बौद्धधर्म-उन्मुखता, लुम्बिनीकरमुक्ति - ।
11.	कान्धार (अफगान)	ग्रीक और आरमाइक	ग्रीक	अहिंसा (यह हिमाधी शिलालेख है)



### — 3. मौर्योत्तरकालीन अभिलेख —

#### 1. कनिष्कस्य सारनाथ-बौद्धप्रतिमाशिल्पः —

(Saranath Buddhist Image Inscription of Kanishka)

स्थानः सारनाथ (बनारस),

समय = 81 ई.

भाषाः संस्कृत बहुल प्राकृत,

लिपिः ब्राह्मी-

विषयः लोकहितसुख के लिए यहि और दान की स्थापना ।  
(विशेष) - कनिष्क - कुषाण वंश का राजा था ।

#### 2. रुद्रदामनः गिरनार-शिलालेखः—

(Girnar Rock Edict of Rudradaman)

स्थानः गिरनार, जूनागढ़ (गुजरात)

समय. 150 ई.

भाषाः संस्कृत

लिपिः ब्राह्मी-

विषयः- सुदर्शन तडाग का इतिवृत्त और पुनर्निर्माण ।

रुद्रदामन की उपाधि - महाक्षत्रप ।

सुदर्शन तडाग वर्णन - सिंहं तदं तडागं सुदर्शनं गिरिनगरम् ।

शिल निर्माता - पुष्यगुप्त

पुनर्निर्माता = सुविशाख / चक्रपालित

गिरनार तडाग से संबंधित = कनिष्क कुषाण ।

### 3. खारवेलस्य हाथीगुम्फा-ऽभिलेखः -

(Hathigumpha Inscription of Kharavela)

स्थान : हाथीगुम्फा (पहाड़ी), उदयगिरि (उड़िसा) - भुवनेश्वर  
लिपि : ब्राह्मी भाषा : संस्कृत प्रभावित प्राकृत, काल : 35 ई.पू.  
विषय : खारवेल चैदि कुल का शासक ।  
नमो अरिहंतान् । का उल्लेख ।

### 4. गुप्तकालीन एवं गुप्तनिरकालीन अभिलेख -

#### 1. समुद्रगुप्तस्य प्रयाग-स्तम्भलेखः -

(Allahabad Pillar Edict of Samudragupta)

रचनाकार : हरिषेण, स्थान : इलाहाबाद (प्रयाग),  
भाषा : संस्कृत, लिपि : ब्राह्मी -  
काल : 250 ई.  
विषय : समुद्रगुप्त का जीवनवृत्त और उपलब्धियाँ ।  
प्रयाग स्तम्भ लेख 'रानी का अभिलेख' कहा जाता है ।  
समतट्टवाक, कामरूप, नेपाल, कर्तुपुर आदि का उल्लेख ।

#### 2. यशोधर्मणः मंदसौराशिलालेखः -

(Mandasor Stone Inscription of Yashodharman)

रचनाकार : वत्समह्वी, स्थान : मंदसौर (म.प.)  
भाषा : संस्कृत, लिपि : ब्राह्मी -  
काल : 529 ई.  
विषय : सूर्यमंदीर का जीर्णोद्धार, पट्टाय-ज्योती -



### 3. हर्षस्य बांसखेडा ताम्रपत्राभिलेखः-

(Bansakheda Copper Plate Inscription of Harsha)

स्थानः बांसखेडा (शाहजहाँपुर) - उ.प्र.

भाषाः संस्कृत

लिपिः उत्तर ब्राह्मीलिपि

कालः 628 ई.

विषयः हर्षवंशवृत्तः (राज्यवर्धन के पुत्र), मौखरी राजाओं की वंशावली  
(पृथ्वी, वल्लभ, सत्याश्रय - हर्ष की उपाधियाँ)

### 4. पुलकेशिन् द्वितीयस्य ऐहोल शिलालेखः-

(Aihole Stone Inscription of Pulakeshin - II)

स्थानः ऐहोल (बीजापुर)

भाषाः संस्कृत

लिपिः दक्षिणी ब्राह्मीलिपि

कालः 634 ई.

विषयः पुलकेशिन द्वितीय की राजप्रशस्ति ।

- \* कविताश्रितकविदासभारविकीर्ति - रविकीर्ति

जयति भगवान् जिनेन्द्रो वीतरा वीतजशमरणजन्मनीकस्य  
ज्ञान समुद्र --- ॥

हेनसांग ने पुलकेशिन को **बुलकेशी** कहा ।